विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

ACCREDITED WITH GRADE A++ NAAC

बहुभाषिक शिक्षा में पश्चिम भारत के प्रारंभिक और पूर्वप्राथमिक स्तर के मुख्य स्त्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण

कार्यक्रम रिपोर्ट

PAC- 23.19 | वर्ष-2024-25

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. सुरेश मकवाना

अध्यक्ष एवं सह-प्राध्यापक (गुजराती)

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली)

श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.) 462002

बहुभाषिक शिक्षा में पश्चिम भारत के प्रारंभिक और पूर्वप्राथमिक स्तर के मुख्य स्त्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण

<u>कार्यक्रम रिपोर्ट</u>

पीएसी-23.19

वर्ष-2024-25

<u>कार्यक्रम समन्वयक</u>

डॉ. सुरेश मकवाना

अध्यक्ष एवं सह-प्राध्यापक (गुजराती)

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली)

श्यामला हिल्स भोपाल (म.प्र.) 462002

प्राचार्य संदेश

भाषा और शिक्षा अब इतने परिकृत और विशिष्टीकृत हो चुके हैं कि जीवन के सामान्य कार्यकलापों में उनकी जड़ें खोजने के बजाय हम प्राय: बिना प्रमाण के उन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन अगर सामाजिक विकास के गहरे संबंधों और भाषा के नजदीक रिश्तों को समझना है तो इस पर हमें कुछ अधिक चिंतन करना होगा और इस क्षेत्र में जॉच शुरू करते ही हम पाते है कि भाषा का आरंभ मानव की गैर-कलातात्मक गतिविधियों में छिपा पड़ा है। भारतीय संस्कृति की एक खासियत है कि लगातार तेजी से हो रहे परिवर्तनों के बावजूद मानव सभ्यता का जीवन, कला संस्कृति एवं सास्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, भाषायी भिन्नताओं का बचे रहना। मानव विज्ञानियों ने आदिवासियों के संस्कृति विकास का अवशोषण उपनिवेशवाद का सामना करना पड़ रहा है। जिसमें विभिन्न स्तरों पर विभाजित किया है। जिसमें भाषा की विविधताओं और बहुभाषिक संस्कृति के बारे में व्यापक जानकारी मिलती है। लेकिन वर्तमान में इन कलाओं का अवशोषण, उवनिवेशावाद का सामना करना पड़ रहा है। जिसमें भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक अस्तित्व के सामने प्रश्नार्थ खड़ा किया है। भाषाई लोक साहित्य, सांस्कृतिक धरोहर एवं जनजातियों द्वारा एक भाषा के माध्यम से जीवन यापन करने वाले समुदाय के जीवनमूल्यों का ह्रास हो रहा है। वैश्विक पूँजीबादी एवं आधुनिक जीवन शैली में हमारी कला लोकवाद्य बहुत जल्दी विछिन्न हो रहा है। इस परिवेश में उन्हें संजोया जाए यह अति आवश्यक है। जनजातियों के शैक्षिक विकास हेतु अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। किन्तु उसका प्रतिफल उचित रूप से नहीं मिल रहा है। एन.सी.ई. आर. टी. भारत के प्राथमिक क्षेत्र में प्रभावशाली भूमिका निभा रही है। प्रारंभिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर तक के पाठ्यक्रम, संरचना पाठ्यपुस्तकें संदर्भ साहित्य एवं प्रशिक्षण, विकास अनुसंधान एवं विस्तार हेतु सतत् कर्मशील है जिसमें लोकवाद्यों और उनकी परम्परा को सौन्दर्यबोध से सहजना अतिआवश्यक है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल की निरंतर प्रत्यनशीन है कि हमारी पश्चिमी सभ्यता जिसके अन्तर्गत गुजरात और दादर नगर हवेली के शैक्षिक मार्गदर्शन एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षण के प्रत्यनशील है जो काफी प्रशंसनीय एवं आवश्यक कार्य है। आज के समय की मांग है क्यों कि यह हमारी सांस्कृतिक अवस्था में आ गई है। अत: अगले कुछ वर्षों में उसे संरक्षित एवं सहजा नहीं गया तो वह अस्तित्वविहिन होने के कगार पर है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सुरेश मकवाणा लोककला, लोक संस्कृति पर परम्पराओं की चिंतन के साथ एक प्ररेक कार्य कर रहे हैं। कलाओं के संरक्षण और विस्तार हेतु सभी कलाकारों को सहधन्यवाद जिन्होंनें अपनी कला का प्रायोगिक अनुभव संस्थान के विकास कार्य में लगाया है। यह कार्य नई पीढ़ी को उपयोगी होगा और कलाओं को लम्बे समय तक जिन्दा रखने वाला साबित होगा सभी को तहदिल से धन्यवाद और शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रो. जयदीप मंडल

प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

अनुक्रम

- निवेदन
- भूमिका
- कार्यशाला की समीक्षा, प्रथम गतिविधि
  -बहुभाषिक शिक्षा में पश्चिम भारत के प्रारंभिक और पूर्व-प्राथमिक स्तर के मुख्य स्त्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण (मॉड्यूल निर्माण)
- प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा, द्वितीय गतिविधि
  बहुभाषिक शिक्षा में पश्चिम भारत के प्रारंभिक और पूर्व प्राथमिक स्तर के मुख्य स्त्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण
- संदर्भ पुस्तकें एवं संस्थाएं
- फोटो गैलरी व समूह माध्यमों में कार्यक्रम

निवेदन

एनसीइआरटी, नई दिल्ली की इकाई क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल द्वारा पश्चिम भारत की विभिन्न चित्रकलाओं, हस्तकलाओं, हस्तशिल्पों और लोक संगीत के वाद्यों पर पिछले छः सात वर्षों में निरंतर शोध-अभ्यास किया जा रहा है। भारत एक महान क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल बहुसांस्कृतिक और कलाओं की अकूत विरासत लिये हुए है। कृषि और वन्य-पर्यावणीय परिवेश भारत की पहचान है। सेटेलाइट और तकनीकी विकास के बाद भी भारत की सांस्कृतिक विरासत में कोई महती परिवर्तन नहीं हुआ है। हाँ बदलाव जरूर आया है। किन्तु लोक संस्कृति, लोकगीत और लोक कलाओं का मूल स्वभाव अभी भी ग्राम परिवेश, जनजातीय क्षेत्र और घुमन्तु समुदायों में बसा हुआ है। लोक संस्कृति मौखिक और अब तकनीकी रूपों से पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित होकर जिन्दा रही है। लोक संगीत की कोई स्क्रीप्ट, संकेत लिपि या नोटेशन नहीं है फिर भी अपनी विरासत में रचीबसी लोकधुनों, लोक संगीत हो, लोकवाद्य हो, लोक कला हो या लोक संस्कृति आज भी हमें उसकी ओर खिंचते हैं।

लोक कलाएँ, लोकचित्र शैली, लोकवाद्य या लोकगाथाएँ कोई विद्यालय में नहीं सीखा जाता। पारम्परिक विद्याओं का बहुल रूप है। जब कोई आदिवासी जंगलों में लकड़ी, फलों के लोभ या पशुओं को चराने जाता है तब प्रकृति के ही विभिन्न माध्यमों से ध्वनि-संगीत सुनता है, फिर वह बॉस, पत्ते, लकड़ी या पत्थरों से संगीत पैदा करता है। कोई पूजा-प्रसंग या धार्मिक कार्यक्रम में समुदाय इकट्ठा होता है और गाने गाता है, नृत्य करता है या कोई संगीत के वाद्य बजाता है। ठीक उसी प्रकार हमारी लोक कलाएं हो या फिर गुफाओं में मिले शैल चित्र, बस ऐसे ही अपना श्रेष्ठ देकर आनंद प्राप्त करता है। इस तरह की परम्पराओं को जानने और परखने के लिए रसिक आँखें और खुले मन से देखना पड़ेगा तब जाकर बरसों से पली-बढ़ी लोक संस्कृति में समाहित मूल्यों, सौन्दर्यबोध, आन्नद, मस्ती और लोगों की वास्तविक संवेदनाएँ नजर आयेगीं। व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक के लगभग सभी स्तरों को लोककलाओं में पिरोया गया है। झुलागीत, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकसंगीत और सोकवायों में निहित जीवन दर्शन, मूल्यों, मान्यताएँ, श्रद्धा, प्रकृति के तत्वों के प्रति कृतज्ञभाव, मिथक, परम्पराएँ और समुदाय की महत्वकाक्षां आदि इसमें सम्मिलित है।

हमने पश्चिम भारत की विभिन्न कलाओं को सहजने का उद्देश्य रखा है। जनपदों में रह रहे कलाकारी तक पहुँच बनाकर संस्थान में आमंत्रित किया गया और उनकी कलाओं का दस्तावेज कर डॉयूमेंट्री और लघु फिल्मे बनाई गई। पश्चिम भारत के गुजरात प्रदेश से ऐसे चुनिन्दा कलाकारों को धुंध कर लाना जो, हरे सभ्यता एवं हस्त शिल्प के पारंपरिक खिलोने एवं कठपुतली कला को पीढ़ी दर पीढ़ी सहजते सँभालते आ रहे है, तथा अपनी आने वाली पीढ़ी और आगामी वर्षों तक इस कला में नवाचार कर स्वदेशी व्यापार को भी बढावा दे रहे है। कलाकारों से साथ हमने गुजरात से स्त्रोत व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जिन्होंने अपने अपने प्रान्तों से कलाकारों की खोज की एवं उनके लिखित में साक्षात्कार किये व् मॉड्यूल निर्माण भी किया। असल में ऐसे कलाकारों को संस्थान में लाना कोई आसान कार्य नहीं

था। अलग-अलग भाषाएँ, वातावरण, परम्परा को हमने संस्थान के छात्रों से रूबरू करवाये, यह एक नवाचार अनुभव था। कठपुतली द्वारा स्टोरी टेलिंग, लड़की, बांस, पपेरमेशी, गोबर एवं मिटटी से खिलौने बनाना एवं हमारे छात्र-छात्राओं से संवाद करना, चर्चा करना, प्रश्न पूछना और नृत्य, गान करना यह अदभूत सौन्दर्य अनुभव कोई शैक्षिक संस्थान में होता है, ऐसा कम ही होगा। हमारी इस स्त्रोत पुस्तिका में गुजरात के खिलौने एवं कठपुतली के बारे में, शोध और विश्लेषणात्मक संवाद के पश्चात लिखा गया है। लोककलाओं और हस्तकलाओं का दस्तावेज और शोधकार्य अनेक संस्थाओं जैसे जनजातीय और राज्य संग्रहालय, भोपाल विविध राष्ट्रीय कला संग्रहालयों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने किया है। यह भी उसी तरह का लेकिन शैक्षिक परिपेक्ष्य का संदर्भ लिये हुआ कार्य जो विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जिसमें छात्र-छात्राओं भावी शिक्षकों और वर्तमान अध्यापकों का जुड़ाय हुआ है। मुझे आशा है कि, लोक संस्कृति में खिलोनें एवं कठपुतली जैसी कलाएं सागर में बुन्दों की तरह है जो हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत को सौन्दर्य प्रदान करते हैं, आनंद देते हैं और भावी पीढ़ी के लिए एक अनूठा संदर्भ प्रदान करेंगें।

गुजरात के पारंपरिक खिलौने एवं कठपुतली से हमारा रिश्ता गहरा बने और उसी धागों, मिट्ठी, लड़की, कागज़ से हमारी मातृभूमि की मिट्री की महक जैसी संवेदनाएँ महसूस हो तो यह हमारा यह कार्य सफल प्रतीत होगा, यह अच्छा होगा, यह अच्छा तो है। साथ ही प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी, निर्देशक, NCERT, दिल्ली प्रो. जयदीप मण्डल, प्राचार्य RIE, भोपाल, प्रो. रमेश बाबु, प्रो. चित्रा सिंह, प्रो. रश्मि सिंघई, प्रो. एन. पी. ओझा, ईटी लैब, ईटी सैल व महेश आसुदानी, प्रशासनिक अधिकारी साथ ही जेपीएफ डॉ. अंकिता जैन व समस्त आरआईई परिवार, भोपाल के प्राध्यापक, सहप्राध्यापक, एवं छात्र-छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

धन्यवाद !

डॉ. सुरेश मकवाना
सह-प्राध्यापक (गुजराती)
सामाजिक विज्ञान एवं भाषा विभाग शिक्षा

भूमिका

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगी विकास का जरिया है। यदि हम बहुभाषी शिक्षा की बात करते हैं तो हमें ज्ञान-उन्मुख दृष्टिकोण रखना होगा। हमारा संविधान के अनुसार शिक्षा प्राप्त करना हर किसी का अधिकार एवं कर्तव्य है। लेकिन जिस माध्यम से यह दिया गया है वह बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे देश में विविध बहुसांस्कृतिक अवधारणाएँ और संस्कृतियाँ भी जीवित हैं। संविधान की आठवी अनुसूची के अनुसार कुल तेइस भाषाएं देश में व्यवहार में है, इस के अतिरिक्त लगभग 1500 क्षेत्रीय बोली-भाषाएं हैं। जिनमें से लगभग 47 भाषाएँ शिक्षा का माध्यम हैं ।(साहा (2017) परिणामस्वरूप शिक्षा की प्रक्रिया अधिक लचीली हो जाती है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 'हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली एवं ज्ञान की विचारधारा के अनुसार ज्ञान अलग-अलग दिशाओं से अलग-अलग तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है। जीवन के जन्म से लेकर अंत तक ज्ञान-समज उपलब्ध रहतें है। हमारे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बहुभाषिक शिक्षा एवं बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर व्यापक, सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक तरीके से चर्चा करनी है। बहुभाषावाद का दृष्टिकोण मूलत: अमेरिका से आया था। श्वेत और अश्वेत का रंगभेद वर्षों से चला आ रहा है। अत: इससे बचने और सभी की अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग भाषाओं का उपयोग करने के लिए इस अवधारणा को अपनाया गया था। भारत देश एक वैविध्य पूर्ण संस्कृति और भाषाई भिन्नता का समावेशी राष्ट्र है। हमारी हर नीति, विभिन्न आयोग, कई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु में भाषा और उसके संदर्भ तथा उपयोग आदि पर विस्तृत चर्चा हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-20 में बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर पुन: ज़ोर दिया गया है। हमने इसी उद्देश्य को लेकर यह कार्यक्रम आयोजित किया है ताकि पश्चिम भारत के पाँच राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों में भाषा पर विशेष कार्य हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 पहले पांच वर्षों के भीतर बच्चों (3-8 वर्ष की आयु समूह) को स्कूल लाने की सिफारिश करती है। किसी व्यक्ति की आजीवन शिक्षा, सामाजिक और भावनात्मक व्यवहार और समग्र स्वास्थ्य इस चरण पर निर्भर करता है। इसके अलावा, बच्चों को साक्षरता, संख्यात्मकता, और रचनात्मक और सौंदर्य संबंधी संवेदनाओं के संज्ञानात्मक क्षेत्रों में उनके शारीरिक और मानसिक-भावनात्मक कौशल के विकास के लिए सक्रिय समर्थन की भी आवश्यकता होती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (प्रारंभिक चरण) फाउंडेशन स्टेज (एनसीएफ-एफएस) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा सिफारिश करती है कि बचपन की देखभाल औरशिक्षा भारतीय संस्कृति और नैतिकता पर आधारित होनी चाहिए । यह बच्चे के अनुभवों को घर के वातावरण के साथ ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के साथ एकीकृत करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जो स्कूल परिसर में विकसित किया जाएगा। यह केवल किताबों से सीखने की मौजूदा प्रणाली

से अधिक अनुकूल खेल और योग्यता-आधारित शिक्षण प्रणाली में बदलाव का प्रतीक है, जहां बच्चों के साथ संबंध अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

उद्देश्य

- बहुभाषिक शिक्षा के संदर्भ में सहायक सामग्री विकसित करने के लिए अवसर की पहचान करने तथा प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना।
- पश्चिमी क्षेत्र के केआरपी को बहुभाषिक शिक्षा पर प्रशिक्षण देना।
- एनईपी-2020 और बहुभाषीक/बहुसांस्कृतिक शिक्षा के संदर्भ में नवाचार को प्रोत्साहित करना।
- बहुभाषीक/बहुसांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से पश्चिमी क्षेत्र की स्कूली शिक्षा का गुणवत्ता विकास और सहयोग करना।

आवश्यकता एवं औचित्य

विभिन्न शैक्षिक मनोवैज्ञानिकों ने बच्चों की वैचारिक और सीखने की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए शैक्षिक आधार पर अध्ययन किए हैं। जिसके फलितार्थ ने विभिन्न शैक्षिक सिद्धांत भी प्रस्तुत किये हैं जिनमें स्लाविन (1997) बहुसांस्कृतिक बहुभाषिक शिक्षा पर कहा, शिक्षण दृष्टिकोण में भाषा विविधता और सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने का एक उत्कृष्ट तरीका है। शिक्षक को शिक्षा में मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषा का गौरव बढ़ाने सोचना चाहिए। प्रादेशिक और क्षेत्रीय संस्कृति, स्थान, अपनी संस्कृति आधारित पुस्तकों, संस्कृति के अच्छे हिस्सों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। इसके लिए बुलेटिन बोर्ड कार्य, पोस्टर कार्य और अन्य आंतरिक वस्तुओं की सजावट करनी चाहिए। जिसके माध्यम से अलग-अलग संस्कृति की पहचान होती है। विभिन्न सांस्कृतिक गीत, संगीत-नृत्य, नाटक, त्यौहार, मेले और वेशभूषा आदि का प्रदर्शन करना चाहिए। किसी पाठ्य पुस्तक की इकाई के पूरा होने पर पाठ्यपुस्तक के साथ पूरक सामग्री के रूप में प्रस्तुत करने की अनुशंसा की जाती है। उनके मतानुसार ऐसा करके विद्यार्थी का अपनी संस्कृति पर गौरव करेगा और मूल भाषा/मातृभाषा का महत्व समझ सकेगा और शिक्षा में जीवंतता कायम रहेगी। यह भूमिका बहुभाषिक शिक्षा के संदर्भ में फिलहाल प्राथमिक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 कहती है, 'विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था को विशेष रूप से प्रभावी बनाया जाय' इसी उपलक्ष्य में शिक्षाविद वूलफ़ॉक (1998) के अनुसार, एक शिक्षक केलिए अपनी कक्षा में किसी जाति, लिंग, जातीयता, संस्कृति या वर्ग के संदर्भ को लिए बिना एक मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा को विकसित करना और बनाए रखना मुश्किल होता है। उन्होंने कक्षा में सभी छात्रों को पूर्वाग्रहों से मुक्त एक समान शैक्षिक वातावरण प्रदान करने की सिफारिश की गई है। इसके लिए छात्रों की सीखने की शैली के प्रति शिक्षक की संवेदनशीलता और कक्षा की गतिविधियों में छात्रों की

भागीदारी सुनिश्चित करना जरूरी है। इसके लिए कक्षा शिक्षण में मूल क्षेत्रीय संदर्भों को विषयवार शिक्षा के विभिन्न स्तरों से जोड़ा जाता है। जहां भी संभव हो भाषा, संस्कृति, पोशाक, जीवन स्तर, आवासीय स्थिति आदि के संदर्भों को शिक्षा में जोड़ना बहुत महत्वपूर्ण है।

पारंपरिक शिक्षा में शिक्षण और सीखना अक्सर कठिन और उबाऊ पाया जाता है। इसका कारण स्कूली विषयों की अनुचित शिक्षण प्रक्रिया और सीखने की प्रक्रिया है। मुख्यत: शिक्षकों के लिए उचित शिक्षण सामग्री की आवश्यकता होती है। शिक्षण को प्रभावी, आनंदमय और गतिविधियों के साथ जीवंत बनाने के लिए, पश्चिमी क्षेत्र के पूर्व/प्राथमिक विद्यालय स्तर के केआरपी को बहुभाषी/बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर आनंदकेन्द्री, कला समेकित और खेल-खेल में शिक्षा को लेकर एक प्रशिक्षण की योजना एनईपी-20 के अनुसार बनाई जाएगी। इसलिए यह कार्यक्रम पश्चिमी क्षेत्र के लिए एमएलई-एमसीई के संदर्भ में विभिन्न प्राथमिक विद्यालय के विषयों के लिए प्रस्तावित किया गया है। यह कार्यक्रम राज्य की आवश्यकता, आधार प्रस्ताव और अल्पसंख्यक और आदिवासी बहुल क्षेत्र-विशिष्ट आवश्यकता को सक्रिय सहायता हेतु निर्धारित हैं।

<u>हम क्या करेंगे ?</u>

- बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक शिक्षा के लिए अवसर की पहचान करने के लिए पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम के विश्लेषण हेतु 05 दिवसीय योजना कार्यशाला।
- पश्चिमी क्षेत्र के मुख्य स्रोत व्यक्ति(केआरपी) को 05 दिवसीय प्रशिक्षण की योजना तैयार करना।
- समग्र कार्यक्रम का रिपोर्ट तैयार करना और बहुभाषिक/बहुसांस्कृतिक मॉड्यूल का प्रकाशन करना।

किसी भी चीज़ की आवश्यकता समाज की विशिष्ट समस्याओं के आधार पर निर्धारित की जाती है। हमारी कुछ समस्याएं राज्यों की भाषिक स्थिति, विशेष समुदाय, जनजातीय जीवन और संस्कृति की विविधता से उत्पन्न हुई हैं, जैसे

- ग्रामीण जनसमुदाय तथा आदिवासियों की भाषाई समस्या
- संकेतलिपि या संदर्भ एवं पहचान की समस्या-
- सूचना एवं ज्ञान की समस्या

जब आदिवासी और सामान्य समुदाय के बच्चों को साक्षरता दी जाती है तो उनके ज्ञान अर्जन का मूल आधार किनारे रह जाता है। नई शिक्षा नीति के अनुसार 'बालवाटिका' और कक्षा एक से शुरु होने वाली पाठ्यपुस्तकों में भाषा का उपयोग एक प्रशिष्ट भाषा के रूप में किया जाता है। इसकी लिपि भी देवनागरी है। गुजराती, मराठी, हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत जैसी अन्य भाषाओं को आरोही क्रम में सीखने की व्यवस्था की गई है। औपचारिक रूप से जब कोई बच्चा

पाठ्यपुस्तक में विषय को समझ लेता है तो पाठ्यपुस्तक ही उसका एकमात्र सहारा होती है। यहां पाठ्यपुस्तक आदिवासी बच्चे के लिए मार्गदर्शन देती है और वैविध्य भी उपलब्ध कराती है, पर बच्चे की मातृभाषा में सबकुछ नहीं होता। क्योंकि बच्चे की मातृभाषा, उसके अनुभव और आसपास के जीवन से जुड़ी है। इसलिए बच्चे को पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करने में कठिनाई आती है। यहाँ पाठ्यपुस्तक का भाषा और विषयवस्तु से कोई लेना-देना रहता नहीं है। जब विषय-वस्तु की भाषा बिल्कुल नई हो तब एक बच्चे की भाषा अलग होती है और उसे समझने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

करीब पच्चीस साल पहले गुजरात के पंचमहल और डांग जिलों में एक पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर कक्षा-1 और 2 की पाठ्यपुस्तकों का भीली बोली और डांगी में अनुवाद किया गया था, लेकिन उचित योजना के अभाव में यह कदम विफल हो गया। और भविष्य के आधार पर, राजनीतिक तौर पर इसका काफी विरोध हुआ। एक राय यह थी कि आदिवासी बच्चों को और भी पिछड़ा रहने दिया जाना चाहिए क्या ! ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें मुख्यधारा अथवा अन्य भाषाओं के ज्ञान से दूर रखने की साजिश की जा रही है। बेशक यह प्रयोग यथार्थवादी नहीं था। पाठ्यपुस्तकों का केवल अनुवाद करने से कुछ हल नहीं होता। बहुभाषी शिक्षा का दृष्टिकोण अन्य भाषाओं के ज्ञान को रोकता नहीं है बल्कि, अपनी भाषा, संस्कृति और जीवन की प्रथाओं के उच्च मूल्यों को एक साथ ग्रहण करने को कहता है। तेलंगाना राज्य का एक अध्ययन बहुत दिलचस्प है। वहाँ के अस्सी (80%) प्रतिशत से अधिक विद्यालय तेलुगु (जो उनकी राज्य-मातृभाषा है) में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक नहीं हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि शिक्षा केवल अंग्रेजी में ही होनी चाहिए। यहां अंग्रेजी भाषा को मातृभाषा से अधिक महत्व दिया जाता है। यह समस्या आज विराट स्वरूप ले चूकी है। अब नई पीढ़ी अपनी भाषाई विरासत और सांस्कृतिक परंपराओं को नजर अंदाज कर रहीं है।

बहुभाषी शिक्षा बहुभाषावाद के बारे में है। समस्या का सही निदान करने के बाद जीवन जीने और नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए अन्य भाषाओं का उपयोग क्यों और कैसे करें यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। वर्तमान युग में_विकास एवं यांत्रिक प्रौद्योगिकी का विकास बहुत तेजी से हुआ है। सामाजिक विशेष और जनजातीय जीवन व्यवहार, मूल्य, भाषा और प्रकृति के जीवन शैली के लक्षणों को विकसित करने के लिए शिक्षा से जुड़ा है। क्योंकि आधुनिक जीवन शैली प्राकृतिक जीवन शैली से कमतर होती जा रही है। मशीनीकरण मानव संसाधनों के सामने बौना साबित हुआ है। वहीं पूरी दुनिया में प्रदूषित हवा और प्रदूषण फैल रहा है। फिर समय आ गया है कि आदिवासी जीवन और ग्रामीण समुदाय को ऐसी दिशाओं में मोड़ा जाए यह आवश्यक है। हमारे क्षेत्र में आदिवासियों की अपनी अनूठी जीवन शैली है। अब तक वे हमारी शिक्षा व्यवस्था में हाशिये पर रहे हैं।

सांस्कृतिक विशेषता और पश्चिमी आधुनिकीकरण के कारण आदिवासियों के बीच शिक्षा का ग्राफ सामान्य शिक्षा प्रतिशत से कम होता जा रहा है। इसके विपरीत, जो आदिवासी छात्र आधुनिक शिक्षा और प्रगति में सफल होते हैं, उन्हें लगता है कि उनका स्थान सामान्य आदिवासियों से श्रेष्ठ है। उसे अपनी भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज हीन लगते हैं जो

एक विरोधी घटक सिद्ध होता है। इस समस्या के समाधान के लिए हम बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक शिक्षा का चयन कर सकते है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी स्पष्ट बताती है कि 'यह वांछनीय है कि बच्चा अपनी पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा कम से कम अपनी मातृभाषा में करे।' इस तरह बहुभाषीशिक्षा (एमएलई) काम आती है। इसके मुख्य पहलू इस प्रकार हैं :

बहुभाषा और बहुसांस्कृतिक शिक्षा से अभिप्रेत है-

- बहुभाषिक शिक्षा को समजना और उसके पर हुए शोधकार्य से ज्ञात होना ।
- आदिवासी और विशेष बच्चों का सर्वांगीण विकास कैसे करें यह देखना।
- अपनी संस्कृति और भाषा को कैसे विकसित कर सकते हैं यह सोचना।
- वर्तमान सांस्कृतिक और भाषाई विरासत से जुड़े रहना या स्थिति के अनुसार उसे बदलना।

संविधान और शिक्षा नीतियों ने त्रि-भाषा फार्मूला दिया है। लेकिन भारत में आदिवासी और विमुक्त समुदाय आज भी मुख्यधारा से दूर हैं। उनकी भाषा त्रिभाषा सूत्र में शामिल नहीं है। क्योंकि किसी भी आदिवासी भाषा की कोई लिपि नहीं होती और व्याकरणिक व्यवस्था नहीं है। अत: इसका प्रयोग केवल बोलने और सुनने के लिये ही किया जाता है। हमारी शिक्षा लिखने और पढ़ने को ज्यादा एकीकृत करती है। यहां एमएलई दृष्टिकोण अन्य भाषाओं के माध्यम से जन भाषा/मातृभाषा को समझने में उपयोगी है। मातृभाषा का अध्ययन राज्य भाषा और फिर अंग्रेजी या हिंदी में किया जा सकता है। अलग-अलग सांस्कृतिक संदर्भों को मातृभाषा में सरलता से आत्मसात करके भाषा और संस्कृति को संरक्षित एवं गौरवान्वित करना इस कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य रहेगा।

धन्यवाद।

डॉ सुरेश मकवाना

कार्यक्रम समन्वयक

प्रथम आयोजन कार्यशाला की समीक्षा

कार्यशाला दिनांक **16** सितंबर **2024** से **20** सितंबर **2024**

बहुभाषी शिक्षा के लिए अवसर की पहचान एवं पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम के विश्लेषण हेतु क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान**,** भोपाल में "बहुभाषिक शिक्षा में पश्चिम भारत के प्रारम्भिक और प्राथमिक स्तर के मुख्य स्त्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण- मॉड्यूल निर्माण कार्यशाला" अंतर्गत पाँच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया | जो इन हाउस बैठक के बाद दूसरी गतिविधि थी।

उपरोक्त कार्यशाला में मध्य-प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं छतीसगढ़ से 15 स्त्रोत व्यक्तियों को संस्थान में आमंत्रित किया गया। जिसमें प्रमुख रुप से ;

1. श्रीमती सविता वायल, बाल भारती, पुणे, महाराष्ट्र
2. श्री राघवजी माधड, जी. सी. ई. आर. टी, गांधीनगर, गुजरात
3. श्री द्रोण साहू, प्रा.शा. बीजेमल, छतीसगढ़
4. श्रीमती पुष्पा शुक्ला, प्रा.शा. साहिसपारा, छतीसगढ़
5. प्रो. जे. आर. सोनवणे, एम. के. भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर
6. डॉ. अश्विन निसरता, चिल्ड्रेन रिसर्च यूनिवर्सिटी, गांधीनगर
7. प्रोफ अशोक कुमार परमार, डिपार्ट्मेंट ऑफ. हिन्दी, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
8. श्री अरविन्दभाई मगनभाई पटेल, वलसाड, गुजरात
9. डॉ. जयंतीलाल बी. बारीस, आर. के. देसाई कॉलेज, वापी
10. डॉ. काशीनाथ विनायक बरहाते, सी. एम. काधी कला महाविद्यालय, आचारपुर, अमरावती
11. डॉ. रुचि मिश्रा, रवीन्द्रनाथ विश्वविद्यालय, भोपाल
12. श्रीमती ज्योति चंदेल, भोपाल
13. श्री हीरा धुरवे, चित्रकार, भोपाल
14. श्री हेमंत देवलेकर, कलाकार, भोपाल

आंतरिक स्त्रोत व्यक्ति

1. डॉ. चित्रा सिंह, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
2. डॉ. व्यंकट सूर्यवंशी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
3. डॉ. गंगा महतो, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

4. डॉ. श्रुति त्रिपाठी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
5. डॉ. अरुणाभ सौरभ, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
6. डॉ. अंकिता जैन, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शामिल हुए I

पाँच दिवासीय इस कार्यशाला के अंतर्गत क्षे. शि. सं भोपाल के कई विद्वानों ने स्त्रोत व्यक्तियों के साथ मिलकर बहुभाषिक शिक्षा के माध्यम से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता विकास और सहयोग करना, बहुभाषी शिक्षा पर प्रशिक्षण देना, एनईपी-2020 और बहुभाषिक शिक्षा के संदर्भ में नवाचार को प्रोत्साहित करना, प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना, इत्यादि बिंदुओं पर एक रूपरेखा त्यार की। साथ ही थिएटेर आर्टिस्ट श्री हेमंत देवलेकेर द्वारा आइसब्रेक ऐक्टिविटी एवं हमारे स्त्रोत चित्रकार द्वारा किताबों के लिए इलेस्ट्रेशन भी बनाए गए। इस कार्यशाला के अंतर्गत हमारे स्त्रोत व्यक्तियों द्वारा बहुभाषिक शिक्षा के संदर्भ में पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुति (प्रेजेंटेशन) भी दिया गया।

यदि हम बहुभाषी शिक्षा की बात करते हैं तो हमें ज्ञान उन्मुख दृष्टिकोण रखना होगा। हमारा संविधान के अनुसार शिक्षा प्राप्त करना हर किसी का अधिकार एवं कर्तव्य है। लेकिन जिस माध्यम से यह दिया गया है वह बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे देश में विविध बहुभाषी लोग एवं संस्कृतियाँ भी जीवित हैं। संविधान की आठवी अनुसूची के अनुसार कुल तेइस भाषाएं देश में व्यवहार में हैइस के अतिरि ,क्त लगभग 47 भाषाएं हैं। जिनमें से लगभग-क्षेत्रीय बोली 1500 परिणामस्वरूप शिक्षा की प्रक्रिया अधिक लचीली हो जाती है। (2017) साहा)भाषाएँ शिक्षा का माध्यम हैं।

पाँच दिवसीय इस कार्यशाला के समापन समारोह में हमारे समस्त स्तोत्र व्यक्तियों ने खुशी व्यक्त की और इस तरह की कार्यशालाओं के नियमित आयोजन करने की बात कहीं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अपना पाँच दिवसीय अनुभव साझा किया। साथ ही साथ संस्थान का भ्रमण, स्टूडियो का भ्रमण आदि भी किया। समापन समारोह में प्रमाण पत्र वितरण के साथ कार्यशालय संपन्न हुई। साथ ही साथ संपूर्ण कार्यशाला का डिजिटल दस्तावेजीकरण ऑडियो एवं वीडियो में हमारे संस्थान के स्टूडियो द्वारा किया गया।

बहुभाषिक शिक्षाप्रारम्भिक, प्राथमिक स्तरमॉड्यूल का निर्माण हमारे बाहरी एवं आंतरिक स्त्रोत व्यक्तियों द्वारा बनाया गया जिसकी रूपरेखा निम्नानुसार प्रस्तुत है

बहुभाषिक शिक्षा प्रारम्भिक), प्राथमिक स्तरकार्ययोजना-मॉड्यूल

क्रम	विषयवस्तु	विशेषज्ञ/लेखक
1	बहुभाषिक शिक्षा का बुनियादी आधार • प्रारम्भिक और प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा • शिक्षा और बहुभाषिक शिक्षा NEP-2020, NCF- FS-22, NCF-SE-23, RTE-2009, विद्या प्रवेश, FLN / NIPUN BHARAT / UNICEF. बालवाटिका- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में (वर्ष 5+(3तथा प्राथमिक शिक्षा • पंचकोश भारतीय :सीखने की परंपरा का आधारस्तंभ) NCF-FS-22	डॉ. सुरेश मकवाणा डॉ. आर. सोनवने
2	बहुभाषिक शिक्षा के क्षेत्र में शोध-अनुसंधान • भूमिका • अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान • राष्ट्रीय अनुसंधान • पश्चिम भारतीय क्षेत्र में अनुसंधान • अंतरालअवलोकन/ • निष्कर्ष	डॉ जे. आर. सोनवणे . डॉ काशीनाथ बर .
3	बहुभाषिक शिक्षा की आवश्यकता विश्लेषणात्मक चर्चा : • नीतियाँ और दस्तावेजों का आधार • शोध अनुसंधान के संदर्भ-ज़मीनी वास्तविकता(केस स्टडी) • संभावित उपाय निर्देश-	डॉ ए. एल. निसरता डॉ. आर. सोनवने
4	बहुभाषिक शिक्षा के लक्ष्यसामान्य, विशिष्ट उद्देश्य • ध्येय लक्ष्य, दक्षता -	डॉ. अशोक परमार

	• सामान्य उद्देश्य • विशिष्ट उद्देश्य • अवलोकन चर्चा-	डॉ श्रुति त्रिपाठी
5	बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा • अर्थ संकल्पना , • परिभाषा व्याप, संभावना , • लक्षण • अवलोकननिष्कर्ष-	डॉजयंतीलाल बारिस श्री द्रोण साहू
6	बहुभाषिक शिक्षा का शिक्षाशास्त्र(पेडागॉजी) : प्रारम्भिक-प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में • बच्चों के घर की भाषा से अन्य भाषा में पारगमन • शिक्षण पध्धतियाँ कौशल्य और रणनीति आदि , • शिक्षक की भूमिका • छात्रों की भूमिका • कक्षा कक्ष वर्ग व्यवहार- • सामुदायिक सहभागिता(अभिभावक और पालक) • मूल्यांकन	डॉ अरुणाभ सौरभ ज्योति चंदेल
7	बहुभाषिक शिक्षा की शिक्षण योजनाएं और घटक • दक्षतासीखने के प्रतिफल /, लक्षित पाठ, उद्देश्य • उद्देश्यों की प्राप्त करने के लिए शिक्षक छात्र गतिविधियां – • वर्ष 1, 2, 3, 4, 5 के लिए गतिविधियां (आयु 3-8 वर्ष तक) • गतिविधियों में उपयोगी सामग्री विषय वस्तु / • MLE कक्षा व्यवस्थापन बैठ/ना प्रदर्शित करने/ सामग्री / • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का अभ्यास • MLE के संदर्भ में कक्षा 1, 2 4 ,3 ,के लिए प्रारम्भिक साक्षरता और संख्याज्ञान	ज्योति चंदेल पुष्पा शुक्ला द्रोण साहू

	• संकेत परिचय पठन कौशल –, श्रवण ,शुरुआती लेखन • कौशल और कथन • साक्षरता कौशल	
8	भाषा शिक्षण में बहुभाषिक शिक्षा • बहुभाषिक शिक्षा और भाषा की चार खंडीय रुपरेखा • भाषा शिक्षण (हिंदी) की शिक्षण योजना • बहुभाषिक शिक्षण में पढ़ने से पहले दौरान तथा बाद की, गतिविधियां)L1, L2 तथा L3 के संदर्भ में(• बहुभाषिक शिक्षण में लिखने से पहलेदौरान तथा बाद , की गतिविधियां • भाषा में खेलअभिनय (प्रारम्भिक एवं प्राथमिक स्तर)- • संवादबातचीत अभिनय गीत/ गा -नतुकबंदिया / • बूझो और जाने पहेलिया –, मुहावरे, कविताएँ	डॉ राघवजी माधड़. डॉ व्यंकट सूर्यवंशी. श्री द्रोण साहू
9	गणित शिक्षण और बहुभाषिक शिक्षा • बहुभाषिक शिक्षा और गणित की चार खंडीय रुपरेखा ELPS (Experience, Language, Picture, Symbol)का सिद्धांत • संख्या पूर्व अवधारणाओं से -संबंधित गतिविधियाँ • गणित शिक्षण की योजना (बहुभाषिक शिक्षण के संदर्भ में) • गणितीय खेल कहानियां, गीत, मुहावरे, पहेलियाँ ,, चित्र-पोस्टर्स एवं फ्लेश कार्ड्स आदि	डॉ . अश्विनी गर्ग डॉ निलेश चापानेरी
10	अंग्रेजी शिक्षण और बहुभाषिक शिक्षा • प्रारम्भिक और प्राथमिक स्तर ? अंग्रेजी कब और कैसे : • कौशल्य चर्चा LSRW)Listening, Speaking, Reading, Writing) एवं व्याकरण • TPR (Total Physical Response अंग्रेजी संदर्भ (• कवितागीत, खेल आदि , • अंग्रेजी माध्यम या विषय ?	डॉ श्रुति त्रिपाठी डॉ गंगा महतो

11	प्रारंभिक , प्राथमिक शिक्षा में बहुभाषिक शिक्षा शिक्षक • बहुभाषिक शिक्षा शिक्षक की अवधारणा • बच्चों के घर की भाषा संस्कृति और परिवेश से परिचय , • बच्चों के घर की भाषा के साथ शिक्षण की अन्य भाषा के पारगमन का कौशल • बच्चों की भाषा की स्वीकृति और संवाद • बच्चों की सहज प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहन • बहुभाषिक शिक्षा में नवाचार • बहुभाषिक शिक्षा और ICT • स्वनिर्मित हस्तपुस्तिका	ज्योति चंदेल पुष्पा शुक्ला श्री द्रोण साहू
12	बहुभाषिक शिक्षा के कक्षा कक्ष का वातावरण- • बहुभाषिक शिक्षा के कक्षा कक्ष की अवधारणा- • स्थानीय खेल (आउट डोर, इनडोर) • स्थानीय प्रादेशिक,कहानियाँ ,लोकगीत,बालगीत के पोस्टर, बिग- बुक, फ्लैश काड्‌र्स, वाक्य पट्टियाँ, शब्द- चित्र • स्थानीय कला कोना खिलौना कोना / प्रदर्शनी // किताबों का कोना /सांस्कृतिक कोना / स्थानीय स्रोत का कोना/ जादुई पिटारा, ई जादुई पिटारा • संगीत -लयताल- और आंगिक-वाचिक हावभाव का संयोजन	ज्योति चंदेल पुष्पा शुक्ला
13	बहुभाषिक शिक्षा में अवलोकन आकलन- • मौखिक चर्चा अवलोकन, आकलन360 ,डिग्री • आवश्यक उपकरण ,पोर्टफोलियो उपाख्यानात्मक/ वृत्तांत , अभिलेख, कार्यपत्रक (वर्कशीट) ,चेकलिस्ट इवेंट , card)	डॉ जे. आर. सोनवणे

14	जादुई पिटारा, खेलों का पिटारा ई जादुई पिटारा , • जादुई पिटारा का परिचय • जादुई पिटारा, ई जादुई पिटारा में अंतर • जादुई पिटारा और बहुभाषिक शिक्षा का संदर्भ • कला हस्तकलाएं, खेल और बहुभाषिक शिक्षा , • कक्षा के अंदर, बाहर खेले जाने वाले खेल और बहुभाषिक शिक्षा	डॉ. सुरेश मकवाणा श्री अरविंद पटेल
15	बिग बुक और कहानी की सैर • बिग बुक की अवधारणा • बिग बुक की आवश्यकता क्यों ? • बिग बुक के कुछ उदाहरण -कहानी की लहर)बिग बुक / बरखा श्रेणी ,बाल चित्र कहानी/पुस्तिका (	ज्योति चंदेल श्री हीरा धुर्वे
16	बहुभाषिक शिक्षा और खेल खिलौना - • अवधारणा (प्रारम्भिक एवं प्राथमिक स्तर) • बहुभाषिक शिक्षा में पारंपरिक और प्रचलित खिलौना आधारित समझ प्रयोग , • कक्षा–कक्ष में उपयोग किए जाने वाले खिलौनों और खेलों का निर्माण एवं निदर्शन • विषयों से जुड़ाव पर चर्चा • निष्कर्ष	श्री अरविंद पटेल डॉ जयंतीलाल बारिस
17	स्थानीय संसाधन एवम स्रोत • सीखने की दक्षताओं के आधार पर विभिन्न राज्यों से प्राप्त संदर्भ पुस्तकें ,कलाएं, हस्तकलाएं ,लोककथाएँ ,कहानियाँ , -लोकगीतगीत पहेलियाँ, पारंपरिक चित्रशैलियाँ, स्थानीय , व्यवहारमूलक सामग्री आदि	सविता वायाळ पुष्पा शुक्ला, द्रोण, .साहू ज्योति चंदेल, डॉ. ए एल निसरता

	• लखारालि/खंदरा) चित्रकथा –स्थानीय कथा कहानी-आधारित(	
18	बहुभाषिक शिक्षण अधिगम में ICT का अनुबंध • विषय वस्तु संदर्भ / शिक्षण सहायक साम /ग्री का निर्माण , ई-जादुई पिटारा, पीएम दीक्षा पोर्टल, ई पाठशाला आदि टूल्स की चर्चा • कक्षा में डिजिटल संसाधनों का प्रयोग	डॉ गंगा महतो डॉनिलेश चापानेरी .
19	रंगमंच ,प्रकृति की सैर और क्षेत्र अध्ययन • शारीरिक आंगिक अभिनय वाचिक ,गतिविधियां, रोल प्ले अभिनय गीत, समूह कार्य, क्षेत्र कार्य , • स्मृति, सोच-समझ आधारित अभ्यास, अवलोकन, गहरी प्रतिक्रिया, संकेतों का निर्माण, संबंध जोड़ना, संगति बनाना, सृजनात्मक और रचनात्मक गतिविधियां	डॉ अरुणाभ सौरभ श्री हेमंत देवलेकर
20	परिशिष्ट :बहुभाषिक शिक्षा की पाठयोजना ○ शीर्षक ○ समयावधि ○ उद्देश्य (सामान्य और विशिष्ट) ○ विषयवस्तु विश्लेषण प्रस्तावना ○ उत्साहवर्धक गतिविधियाँ ○ प्रश्न/कहानी मुख्य विषयवस्तु प्रस्तुतीकरण ○ शब्द भंडार वृधि ○ सामूहिक गतिविधियाँ	डॉ अशोक परमार डॉ वेंकट सूर्यवंशी डॉ अंकिता जैन

	चिंतनात्मक अध्यापन प्रश्नोतरी आकलन की विधियाँ ○ शिक्षक की भूमिका ○ छात्रों की भूमिका ○ स्त्रोत ,संसाधन (सामुदायिक सहयोग, पुस्तकें-चित्रकला, खेल, खिलौना आदि) परिशिष्ट :॥ • विषय विशेषज्ञों की सूची • संदर्भ ग्रंथ सूची प्री टेस्ट, पोस्ट टेस्ट, मार्गदर्शिका , • वेबसाईट्स पोर्टल, एप्स आदि ,	

आयोजन कार्यशाला के छायाचित्र

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल
Galaxy A34 5G

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा

कार्यशाला दिनांक- 31 जनवरी से 4 फरवरी 2025

बहुभाषी शिक्षा के लिए अवसर की पहचान एवं पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम के विश्लेषण हेतु क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान**,** भोपाल में "बहुभाषिक शिक्षा में पश्चिम भारत के प्रारम्भिक और प्राथमिक स्तर के मुख्य स्त्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण– मॉड्यूल निर्माण कार्यशाला" का आयोजन पिछली कार्यशला के अंतर्गत किया था एवं द्वितीय कार्यशाला में पश्चिम भारत के 50 स्त्रोत व्यकियों का प्रशिक्षण रखा गया था। जिसके अंतर्गत पाँच दिवस स्त्रोत व्यक्तियों को बहुभाषिक शिक्षा द्वारा शिक्षण एवं तरह तरह की गतिविधियों जैसे- बहुभाषा में रंगमंच, खेल-कूद, बहुभाषा में गीत, कविता गायन द्वारा कैसे बच्चों के साथ संवाद किया जा सकता है आदि बिन्दुओं पर चर्चा की गई।

हमारे बीच डॉ. महेंद्र कुमार मिश्रा जी मौजूद रहे जिन्होंने पीपीटी प्रजेंटेसन द्वारा बहुभाषिक शिक्षा पर चर्चा की, आप नेशनल एडवाइजर, मल्टीलेंगुअल एजुकेशन, लैंग्वेज़ एंड लर्निंग फाउंडेशन, न्यू देहली में कार्यरत है।

डॉ. जे.आर. सोनवाने, प्रो. एंड हेड, डिपार्टमेंटट ऑफ़ एजुकेशन, भावनगर यूनिवर्सिटी गुजरात, डॉ. आश्विन निसर्ता, गांधीनगर, डॉ. अशोक परमार, अहमदाबाद, डॉ. काशीनाथ बारहटे परतवाडा, श्रीमती ज्योति चंदेल, भोपाल, डॉ. रुचि मिश्रा एवं श्री हेमंत देवलेकर भोपाल से हमारे मध्य मुख्य स्त्रोत व्यक्तियों के रूप में उपस्थित रहे एवं प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया। पाँच दिवासीय इस कार्यशाला के अंतर्गत क्षे. शि. सं भोपाल के कई विद्वानों ने स्त्रोत व्यक्तियों के साथ मिलकर बहुभाषिक शिक्षा के माध्यम से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता विकास और सहयोग करना, बहुभाषी शिक्षा पर प्रशिक्षण देना, एनईपी-2020 और बहुभाषिक शिक्षा के संदर्भ में नवाचार को प्रोत्साहित करना, प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना, इत्यादि बिंदुओं पर एक रूपरेखा तैयार की। साथ ही थिएटर आर्टिस्ट

श्री हेमंत देवलेकेर द्वारा आइसब्रेकर ऐक्टिविटी भी करायी गई। इस कार्यशाला के अंतर्गत हमारे स्त्रोत व्यक्तियों द्वारा बहुभाषिक शिक्षा के संदर्भ में पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुति (प्रेजेंटेशन) भी दिया गया।

उपरोक्त कार्यशाला में मध्य-प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं छतीसगढ़ से 12 स्त्रोत व्यक्ति, 32 प्रतिभागी एवं क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान से 15 आन्तरिक स्त्रोत व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराइ। प्राचार्य प्रो जयदीप मण्डल एवं प्रो चित्र सिंह ने मार्गदर्शन दिया। यह कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्त्रोत व्यक्तियों की सूची:

1.	Dr. Mahendra Mishra	Managing Director, National Folk Foundation, Raipur
2.	Ms. Jyoti Chandel	RENG-FIRE, Bhopal
3.	Dr. Kashinath Barhate	CM Kadhi Kalaa Vigyan Mahavidhalaya Paratvada, Amravati
4.	Dr. Raghavji Madhad	GCERT,Gandhinagar
5.	Dr. Nilesh Chapaneri	Principal DIET, Amreli
6.	Dr. Ashwin Nisarta	Children’s University Gandhinagar
7.	Dr. Jagdip Sonwane	HOD, Dept. of Education, Bhawnagar
8.	Dr. Ashok Parmar	Gujarat Vidyapith, Ahmedabad
9.	Dr. Ruchi Mishra Tiwari	RNTU, Bhopal
10.	Sh. Arvindbhai M. Patel	Dhodhadkuva, Valsad, Gujarat
11.	Dr. Jayantilal B. Baris	R.K. Desai College of Education, Vapi
12.	Sh. Hemant Devlekar	11, Rishi Valley Vaishali, Bhopal

प्रतिभागियों की सूची;

1.	Chetan Kumar Shantilal Valand	Pratappura Primary School Halol, Panchmahal
2.	Prajapati Pankaj Kumar	Mordungra Primary School, Gujarat
3.	Chandra Prakash	Govt. Primary School (EM) Gandhipara Diu
4.	Yogeshbhai Madhubhai Patel	Primary School Nandgam Bardapada, Valsad
5.	Mukeshbhai Mansukhbhai Ninama	Shree Thalalimdi Pri. School, Dahod Gujarat
6.	Umang Kumar Ajaybhai Raval	Shree Nichi Dhanal Pri. School, Khedbrahma, Gujarat
7.	Rajesh Kumar Shantiyalbhai Suvera	Khaumapur Primary School TA Bhiloda, dist. Arvalli, Gujarat
8.	Pittarbhai Sumanbhai Gamit	Primary School Balamba TA Kukarmunda, dist. Tapi, Gujarat
9.	Yogeshbhai Satubhai Diva	Primary School Nadagchond TA Waghai, dist. Dang, Gujarat
10.	Vinodbhai Jayantilal Vasava	Primary School Ambadi TA- Umarpada, dist.Surat, Gujarat
11.	Dineshbhai V. Rathwa	C.R.C.Co Dhandhoda dist. Chhotaudepur, Gujarat
12.	Dineshbhai D. Bamaniya	Navaghara Varg Prashala, dist. Mahisagar, Gujarat
13.	Mukesh K. Sachde	Atal Nagar Govt. School Ta Bhuj dist. Kutch, Gujarat
14.	A.V. Gadhavi	H.M. Kvas School dist. Kutch, Gujarat
15.	Anita Tukaram Dane	Z.P.P.S. Dharmapuritanda Ta- Kandhar dist. Nanded, Maharastra
16.	Sudhaben Vasantbhai Vasava	BRC. Co ordinator Ta- Netrang dist. Netrang, Gujarat
17.	Rupal Ajitbhai Dixit	Satem Primary School dist. Navsari, Gujarat
18.	Ms. Kavita	P.S. Kakadiyafaliya Em. Silvassa DNH & DD
19.	Nilesh Arun Tuljapure	Z.P.P.M. School, Chikhali Ta Mangarulpir dist. Washim, Maharashtra
20.	Nilesh Rameshrao Misal	Sant Gadge Maharaj Pri. School, Mangrupie dist. Washim Maharashtra

21.	Pramod Arvind Dombe	Rayat Shikshan Sanstha's Manjari H. School, dist. Solapur Maharashtra
22.	Narayan Nanarao Shinde	Z.P.P. School Baj, Tal-Jath dist. Sangli, Maharashtra
23.	Sunita Govind Rane	Z.P.P. School Ozarwadi Tal-Chiplun dist. Ratnagiri Maharashtra
24.	Kavita Jayram Pawar	Z.P. School Ambed Budruk No.04 Ral. Sangmeshwar dist Ratnagiri MH
25.	Pravin Dinkar Khaire	P.E. School Arambha Mahavidyalaya, Nasik Road Nasik Maharashtra
26.	Dayanand S. Mokal	R.Z.P. School Valavali, Tal-Panvel Raigad, Maharashtra
27.	Valsingbhai Tejiyabhai Makvana	Khuntanakheda Pre.School Ta Jhalod dist. Dahod, Gujarat
28.	Amrutbhai Fulabhai Katara	CRC Ankali Ta Devgadh Baria dist. Dahod, Gujarat
29.	Pratapsinh Narsing Maida	Suradugri Faliya Varg Primary School kantu dist Dahod Maharashtra
30.	Prajapati Govind Kumar	Nisarta Primary School Ta-Zalod dist. Dahod, Gujarat
31.	Anjali Shashikant Godase	Z.P.P. School Biramanewadi Tal-Jaoli dist Satara Maharashtra

आंतरिक स्त्रोत व्यक्ति:

1.	Dr. Chitra Singh	Regional Intitute Of Education, Bhopal
2.	Dr. Ashwini Garg	Regional Intitute Of Education, Bhopal
3.	Dr. Ganga Mehto	Regional Intitute Of Education, Bhopal
4.	Dr. Shruti tripathi	Regional Intitute Of Education, Bhopal
5.	Dr. Arunabh Saurabh	Regional Intitute Of Education, Bhopal
6.	Dr. Kulveer Chouhan	Regional Intitute Of Education, Bhopal
7.	Dr. Venkat Babu Rao	Regional Intitute Of Education, Bhopal
8.	Dr. Alka Singh	Regional Intitute Of Education, Bhopal
9.	Dr. Pradhuman Singh Lakhawat	Regional Intitute Of Education, Bhopal
10.	Dr. Ankita Jain	Regional Intitute Of Education, Bhopal

11.	Dr. Sameeksha Sharma	Regional Intitute Of Education, Bhopal
12.	Dr. Sarvesh Pandey	Regional Intitute Of Education, Bhopal
13.	Prateek Gupta	Regional Intitute Of Education, Bhopal

Problems of Teaching Tribal Languages

Dr. Mahendra Kumar Mishra

- Consider when a doctor does not know the patient's language
- What will happen?
- Consider when a teacher does not know the children's language?
- What will happen ?

Situation 1

These children are tribes. They don't understand the textbook language. How can I teach?

Situation 2

These children speak in a language I don't know. How can I teach them?

Situation 3 This teacher speak a language we don't know< what is he teaching.

Situation 4 Our coming to school is a meaningless presence. For hours we sit in the classroom without any purpose.

- In a village or in a shop people use language mutually and understand their purpose of action.
- A Punjabi anywhere in India masters local language for his promotion of business
- A missionary , foreigners , researchers come to India and study Indian language and culture and many things. While they come, they don't know the local language , but they learn the language from the community
- Then why a local teacher in village school don't understand children's language ?

What are the reasons ?

Teachers are made to teach the standard state language to abide by the state curriculum and textbooks Teachers are trained in the training institute where the issue of tribal children's language or knowledge is not included. (pre- service/in-service)

- State curriculum designers and teacher trainers don't include the content of tribal culture and language in textbooks
- The upper class/caste and middle-class people design the curriculum suitable to their interest and values
- The national policy and state policy of education is literally not followed

- Teachers from tribal communities are also a part of state uniform education system. They don't think or know that the constitution and education policies are in favour of tribal education to be adopted in schools by the state.
- Teachers from tribal communities live in a culture of forgetting, Educated tribal youths don't inherit the heritage knowledge and language from their elders
- There is a belief that their knowledge and language will not help them in development
- Nontribal teachers do have a negative and different attitude and belief on tribal children, language and culture
- Tribal children don't understand the standard language and the knowledge imparted to them in initial years
- Teachers find it difficult to teach tribal children
- Even the state introduce tribal language textbooks in schools, nontribal teachers find it difficult to teach the textbooks to children
- Tribal teachers knowing children's language also fail to use their language due to lack of orientation
- Either way , children suffer and deprived of learning
- Each child come with her experience in her language
- This is known as prior experience of the children which need to be added to their learning
- We don't explore children's prior experience - since we don't know children's language and children don't know school languages
- There is a need for communicative language between the teachers and students
- What could be the Possibilities? How the teachers handle the classroom ? When a teacher don't know children's language how she can understand, speak and communicate with children ?

Children in diverse linguistic situation in classroom may have a common link

i. language which everybody knows , understand and speak to some degree
ii. Teachers may be from some local communities knowing children's language of communication
iii. Some children are bilingual, and teachers are also bilingual /multilingual
iv. Teachers need to listen , understand and speak children's language gradually over the years.
v. Children should try to appreciate each other's language by listening, understanding and speaking slowly.

- Teacher will form 3- groups based on children's home languages
- Teacher show the picture of the story to children and read aloud the text in 3- languages

- **Home Language 1** : 3 minutes reading showing the picture
- **Home language 2** Showing the same picture teacher will read the text in home language 2
- **Home language 3** Teacher read out the story in home language 3 showing the picture ,similarly HL 4 can also be read out.
- For this oral speaking and reading teachers will take 12-15 minutes for 3 languages. We have to give tome for each language
- Each group of children listened the story in their home language
- They understood the story and spoke the story easily
- They got meaning of the story
- They can get a mental picture of the story and imagine the story from their prior experience
- They connect the landscape of the story from their visual world.
- Children listened other languages of other children and try to understand the meaning of the words and sentences
- Teacher can grasp the home language of the children and develop understanding on children's language
- Gradually a multilingual ecology will develop in the classroom where every child can get respect and self-image with freedom to speak .
- This is not a one day work.
- Children will have equal participation
- Equal communication in their languages
- Develop Identity and self-image
- Freedom of expression
- Mutual respect and tolerance to each other's language
- Children learn others language with curiosity, develop intellectual ability to know other languages
- Teacher's reveal how it is a resource to teach multilingual children with their languages
- New knowledge from all the languages will be available to all children
- A multicultural world with rich vocabulary of words and stories
- Sufficient materials in home languages
- Big books, story book, picture story, song poster
- Alphabet chart in home language, and alphabet book
- Print rich materials, picture word list and workbook
- A lot of language activities for children

- Gradual inhibition to home language will disappear
- Children will retain in classroom, reduce dropouts
- Classroom will be meaningful and comprehensive
- Reading and writing will be easier and interesting
- Word and letter recognition, decoding and encoding
- Blending and segregating
- What is important is TIME and PATIENCE
- Have ample time to spend in home languages in classroom
- Have patience to explore the new classroom
- An unforeseen classroom situation will be visible to children and teachers,
- Teachers will gain a lot from MLE classroom , they can distinguish the monolingual classroom and m multilingual classroom and can understand why home language is important
- **Known language**
- **Hindi- unknown story**
- **Seven Sun Story**
- **Known story**
- **Unknown language**
- **English**
- Use oral language development kit for speaking and listening and thinking
- key words for word recognition, decoding , reading ,and writing
- reading simple words and making sentences
- writing simple words and 3- word sentences
- use oral language development kit for speaking and listening and thinking
- key words for word recognition, decoding , reading ,and writing
- reading simple words and making sentences
- writing simple words and 3- word sentences
- mother tongue based MLE
- mother tongue major and school language minor in class I and then equalizing
- MT and L2 using equally in classroom
- first two years MT and next L2
- A strong MT based MLE is for 8 years from ECE to class V.
- A weak model is for class I and II for two years
- Good number of instructional materials in home language for ECCE to class III - 6 years

- supplementary readers 2 years (class IV and V)
- NEP suggests for 8 (3+ 3 + 2) years of MLE
- The SCERT , RIE and DIETS should prepare materials in home languages followed by School languages
- Home language can also be used for teaching L2 and English
- Unless you delve in the river , you cannot measure its depth
- Unless you go to forest you cannot know its secrets
- Unless you experience a classroom in practice you cannot know the children
- Unless you respect other languages, you cannot master the art of Multilinguality
- So Spend one year/ two years and more and explore what is still unexplored in the multilingual classroom
- Once you delve to MLE, many new ideas will emerge, many new approaches and techniques will appear through you and the children.
- Consider , children and languages are the best source of learning

Feedback

सुधा वसावा

नेतरंग भरूच, गुजरात

बहुभाषिक शिक्षा पर आधारित पश्चिम भारत के स्रोत व्यक्तियों के प्रशिक्षण हेतु क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान एनसीआरटी भोपाल में NEP 2020 के उपलक्ष में पांच दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिनमें से प्रथम दिवस 31 जनवरी को सुबह 9:30 बजे से प्रशिक्षण वर्ग शुरू किया गया सुबह के प्रथम सेशन में कार्यक्रम समन्वयक आदरणीय डॉक्टर सुरेश मकवाना सरने दिनांक 31 जनवरी से 4 फरवरी तक के कुल 5 दिनों के प्रशिक्षण वर्ग के बारे में सभी प्रशिक्षार्थियोंको बड़े ही प्रेम से सभी जानकारी प्रदान की और आमंत्रित सभी प्राध्यापक गण का परिचय दिया ।कार्यक्रम के उद्घाटक माननीय डॉक्टर महेंद्र मिश्रा सर ने सभी प्रशिक्षार्थियों को इस वर्ग से अवगत कराया ।इस प्रशिक्षण वर्ग के पहले सेशन में कार्यक्रम के उदघाटक माननीय डॉक्टर महेंद्र मिश्रा सरने आर्टिकल 350 A का जिक्र करके बच्चों के लिए बहुभाषिता कितनी आवश्यक है इनके बारे में विस्तार से हमें समझाया साथ ही राष्ट्रीय एकय कितना जरूरी है इसके बारे में अपने प्रारंभिक उदबोधनमें हमें बताया ।इसके बाद प्रोफेसर डॉक्टर आईबी चूकतेय सरने अपने सेशन में बताया कि हर बच्चा अपने आप में निपुण है बच्चों की शिक्षा के लिए बहुभाषिकता बहुत जरूरी है साथ में भाषा के दो भाग बेसिक और CALP की समझ हमें दी । उसके बाद श्री अरुणाभ सौरभ सरने सभी अध्यापक का अभिवादन किया। उसके बाद माननीय डॉक्टर महेंद्र मिश्रा सर ने हमें बहुभाषिकता के बारे में बहुत ही अच्छी जानकारी प्रदान की और बताया कि बहुभाषिता हमारी शक्ति है यदि बच्चों को अपनी भाषा ना पढ़ाई जाए तो शिक्षा में कौन से नुकसानहो सकते हैं

1.ड्रॉप आउट रेशयों बढ़ जाएगा

2. बच्चों का आत्मसम्मान नष्ट हो जाएगा

3. बच्चे अपने ही संस्कृति को ठीक से पहचान नहीं सकेंगे ।

साथ ही आपने FLN ,NEP 2020 MLE के मुख्य उद्देश्य, L1 L2, कहानी कैसे बनती है इंस्ट्रशनल अप्रोच, बच्चों को कौन से आसान तरीकों से पढ़ाया जाएगा , बच्चों को कौन से आसान तरीके से पढ़ाया जाए तो वह अच्छे से सीख सकते हैं आदि के बारे में बड़े ही विस्तार से हमें जानकारी प्रदान की आपने अर्जन और अधिगम को बहुत ही आसान तरीके से उदाहरण के द्वारा समझाया आपने हमें " पांच चूज़े थे" एक वाक्य के माध्यम से इस वाक्य को अलग-अलग भाषा में किस तरह लिखा और बोला जाता है उसके बारे में बहुत ही अपने रमुजी शैली से हमें सिखाया और बताया कि छोटा बच्चा जब पहली बार क्लास में आता है या पहली बार कोई भाषा सुनता या लिखना है तब किन-किन समस्याओं से जूझता है उसके बाद हमारा सेशन खत्म हुआ और हमने विश्रांति के समय अपना लंच लिया लंच के बाद दूसरे सेशन में डॉक्टर जगदीप सोनवने सर ने हमें MLE शिक्षा क्यों जरूरी है? वाचन , बांचन,NEP 2020 ,L1 L2 के बारे में अनेको उदाहरण और कहानी के माध्यम से जानकारी दी। उसके बाद कार्यक्रम समन्वयक महोदय श्री डॉक्टर सुरेश मकवाना सर ने फिर से सभी प्रशिक्षार्थियों को बच्चों की शिक्षा पद्धति, बच्चों का खेल एडॉलेशन एज्यूकेशन के बारे में हमें जानकारी दी उसके बाद डॉक्टर बराते सर ने बहुभाषी शिक्षा में शोध अनुसंधान की जानकारी दी। सभी पाठशाला में आनंददाई शिक्षा पद्धति होनी बहुत जरूरी है बच्चों को पढ़ाई के साथ खेलने के लिए भी समय देना अति आवश्यक है यह बताया। उसके बाद फिर से डॉक्टर जगदीप सोनवने सर ने बहुवासी शिक्षा में शोध अनुसंधान शिक्षा का पाठशाला में कैसे अनुसंधान कर सकते है ,सभी शिक्षक के पास बच्चों की कौन सी जानकारी होनी चाहिए उसके बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की ।इस तरह प्रशिक्षण का पहला दिन सभी प्रशिक्षार्थियों के लिए बहुत ही ज्ञानसभर रहा। अंत में डॉक्टर ज्योति जी ने हमें अगले दिन के लिए जरूरी सूचना दी और सभी गुरुजन का अभिवादन किया।

छाया चित्र

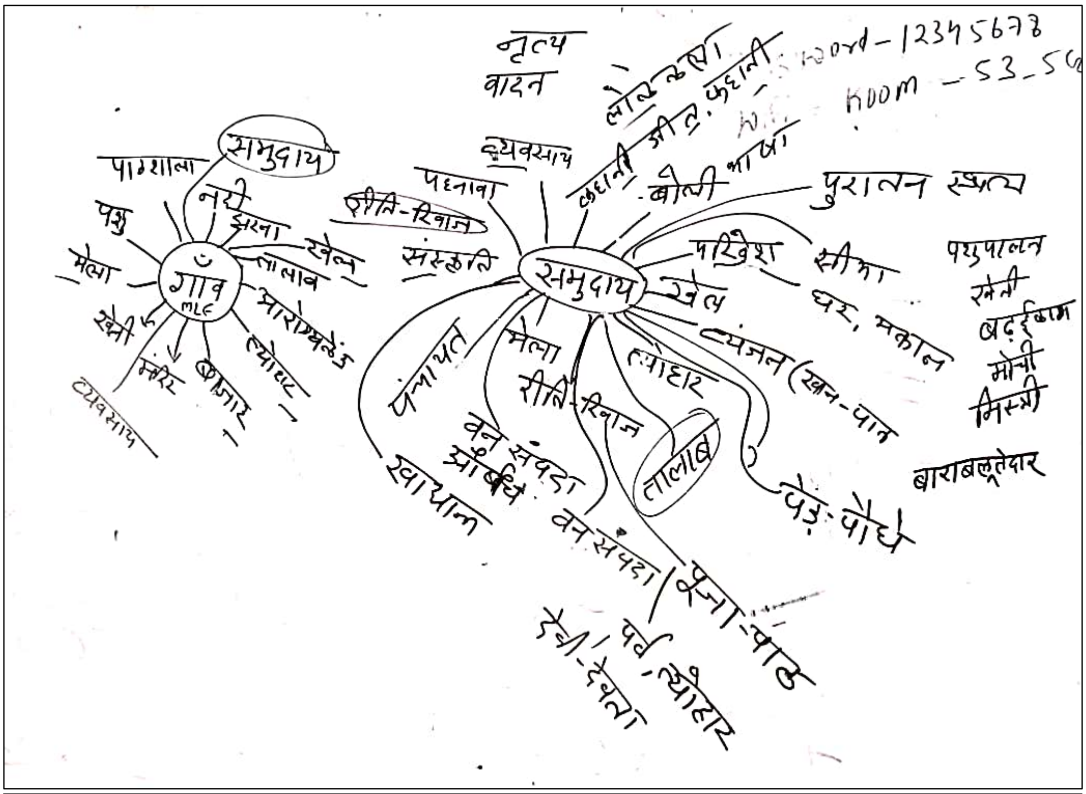
नृत्य
वादन
लोककथा
व्यवसाय
पहनावा
रीति-रिवाज
संस्कृति
समुदाय
पुरातन स्थल
परिवेश
सीमा
घर, मकान
खेल
व्यंजन (खान-पान)
त्योहार
मेला
पंचायत
तालाब
पेड़-पौधे
वन संपदा
औषधि
पूजा-पाठ
पर्व, त्योहार
देवी-देवता
पशुपालन
खेती
बढ़ईकाम
मोची
मिस्त्री
बाराबलूतेदार
गाँव
पाठशाला
नदी
झरना
तालाब
मेला
खेती
मंदिर
बाजार
व्यवसाय

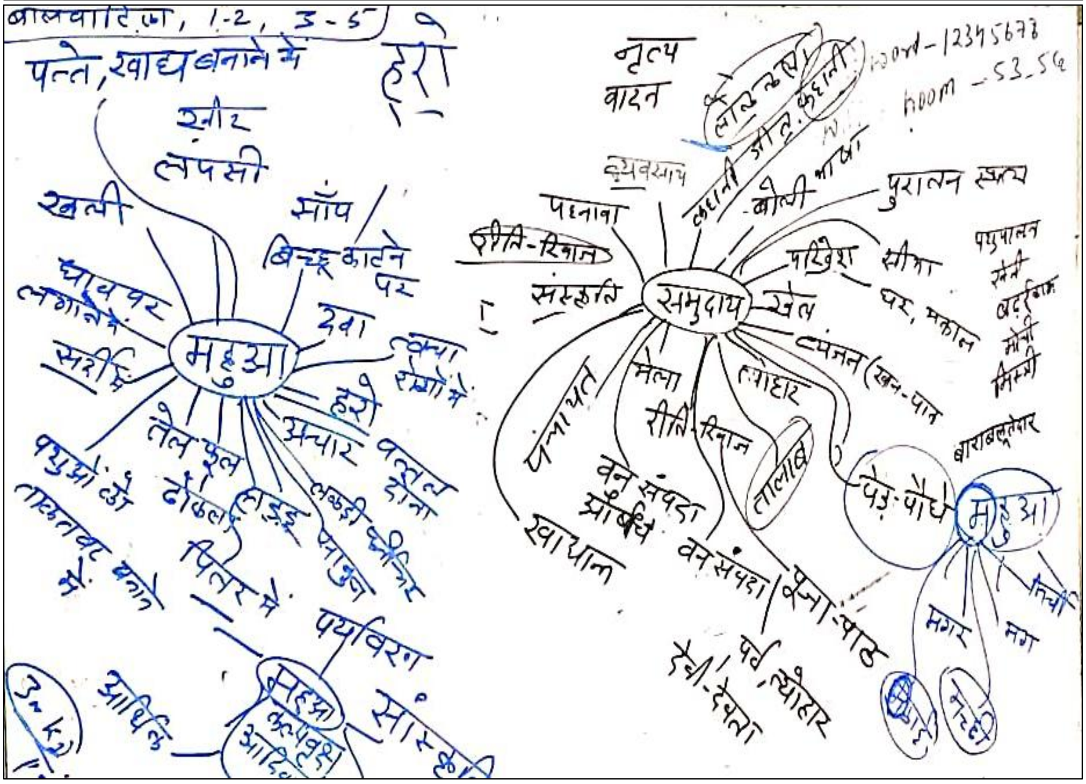
पत्ते, खाद्य बनाने में
लपसी
खेती
साँप बिच्छू काटने पर
दवा
महुआ
तेल
फूल
अचार
लकड़ी
पर्यावरण
संस्कृति
नृत्य
वादन
व्यवसाय
पहनावा
रीति-रिवाज
संस्कृति
समुदाय
पुरातन स्थल
परिवेश
सीमा
घर, मकान
खेल
व्यंजन (खान-पान)
त्योहार
मेला
पंचायत
तालाब
पेड़-पौधे
वन संपदा
औषधि
पूजा-पाठ
पर्व, त्योहार
देवी-देवता
बाराबलूतेदार
मगर

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION

BHOPAL

"Training on Multilingual Education to KRPs of Foundational, Preparatory School level of Western Region

Date: 31st January to 4th February, 2025 -Time Table

Date	9:30 to 11:00AM		11:10 to 1:00 p.m.		2:00 to 3:30 p.m.	3:40 to 5:30 p.m.
31-1-25	नामांकन एवं उद्घाटन	T E A - B R E A K	पूर्व भूमिका और बहुभाषिक शिक्षा MM/SK	L U N C H - B R E A K	बहुभाषिक शिक्षा की आवश्यकता : विश्लेषणात्मक चर्चा -JS/AN	बहुभाषिक शिक्षा के क्षेत्र में शोध-अनुसंधान : JS/KB
1-2-25	बहुभाषिक शिक्षा के उद्देश्य ,लक्ष्य ,समस्या MM/AP		MLE- सकारात्मक कक्षा–कक्ष : भावावरण का निर्माण/पूर्वधारणा/गतिविधियां MM/JC		बहुभाषिक शिक्षा का शिक्षाशास्त्र) : पेडागॉजी (JS/KB	बहुभाषिक शिक्षा की शिक्षण योजनाएं और घटक JC/DS
2 -2-25	भाषा शिक्षण में बहुभाषिक शिक्षा-RM/VS		आंकलन /अवलोकन , / उपकरण / माध्यम प्रगति समग्र / पोर्टफोलियो पत्रक, JS/NC		प्रारंभिक, प्राथमिक शिक्षा में बहुभाषिक शिक्षा -शिक्षक JC**/**AP	गणित शिक्षण और बहुभाषिक शिक्षा AG
3 -2-25	लखारा/लिखंदरा – चित्रकथा स्थानीय कथा आधारीत-SK/HD		अंग्रेजी शिक्षण और बहुभाषिक शिक्षा-ST		चलों खिलौने बनाए (TBP-Toy Base Pedagogy) AP/JC	खेलों का पिटारा – खेल खेल में शिक्षा)इन्डोर और आउट डोर खेल) HD/JC
4-2-25	रंगमंच ,रोल प्ले , ,वाचिक-आंगिक गतिविधियां**AS/HD**		MLE-शिक्षण अधिगम में ICT का अनुबंध कक्षा में डिजिटल संसाधनो का प्रयोग-GM		कहानी की लहर,बिग बुक / बाल चित्र कहानी/ पुस्तिका(प्रदर्शनी-LTM-खेल खिलौनाचार्ट्स/कार्ड्स/ सभी स्रोत व्यक्ति-JC/AP	समापन एवं प्रमाणपत्र वितरण प्राचार्य, अध्यक्ष

उद्घाटन सत्र

A++
NAAC
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
एनसीईआरटी
भोपाल द्वारा आयोजित
PAC-23.19 वर्ष 2024- 25
"बहुभाषिक शिक्षा में पश्चिम भारत के प्रारंभिक और प्राथमिक स्तर के मुख्य स्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण"
दिनांक: 31 जनवरी से 4 फरवरी

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

समूह माध्यमों मे कार्यक्रम

नवराष्ट्र

www.navarashtra.com

शिक्षिका अनिता दाणे - जुंबाड यांना मिळाली राष्ट्रीयस्तरावर सहभागाची संधी

भोपाळमधील चर्चासत्रात घेतला सहभाग

कंधार, (वा.) भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे राष्ट्रीय स्तरावरील पाच दिवसीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील अनेक शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले. त्यात धर्मापुरी तांडा येथील शिक्षिका , साहित्यिक अनिता दाणे - जुंबाड यांचा सहभाग होता.महाराष्ट्रातील सहभागी शिक्षकांनी चर्चासत्रात प्रभावी सादरीकरण केले. प्रत्येक राज्याची स्वतःची प्रादेशिक भाषा असते. आपल्या महाराष्ट्रातील जशी मराठी भाषा बोलली जाते. तशीच प्रत्येक राज्याची स्वतःची भाषा आपल्या प्रदेशात बोलली जाते. मुलांचे प्राथमिक शिक्षण राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार ते मातृभाषेतूनच झाले पाहिजे.

भाषा समजून घेऊन शिक्षण द्यावे लागते

मराठी भाषा आणि त्याच्या विविध बोलीभाषा देवनागरी लिपीत आणि जगभर लिहिता येतात .प्राथमिक शिक्षण घेत असताना मुले सहसा आपल्या मातृभाषेत बोलत असतात. आपल्या मराठी भाषेत विविध बोलीभाषा असल्याने मुलांची भाषा समजून घेऊन त्यांना शिक्षण द्यावे लागते. विविध भाषेतील मुले एका वर्गात एकत्र शिक्षण घेत असताना शिक्षकांना त्यांना अध्यापन करणे मोठे जिकरीचे असते .या सर्वासाठीच बहुभाषिक शिक्षण ही काळाची गरज आहे .

प्रशिक्षण दिले गेले

यासाठी देशातील विविध राज्यांतून भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे पाच दिवस शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते. शिबिरात विविध तज्ज्ञांकडून स्थानिक भाषेबरोबरच मूलभूत शिक्षण कसे द्यावे, उदाहरणार्थ समज आणि प्रशिक्षण एका विशिष्ट पद्धतीने दिले गेले.त्यात डॉ. चित्रा सिंग , डॉ. महेंद्र मिश्रा, डॉ. ज्योती चंदेल, डॉ. राघवजी मधड, डॉ. रुची मिश्रा, डॉ. जगदीप सोनवणे, डॉ. गंगा : मेहतो, डॉ. निलेश चंपानारी आदींनी मार्गदर्शन केले .या प्रशिक्षणाचे अध्यक्ष सुरेश मकवाना यांनी मार्गदर्शनासह संपूर्ण कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन केले.

Nanded Plus Edition

Feb 10, 2025 Page No. 4

Powered by: Navarashtra.com

ભોપાલ ખાતે યોજાયેલ રાષ્ટ્રીય કક્ષાની બહુ ભાષીય સેમિનારમાં પંચમહાલનું પ્રતિનિધિત્વ આચાર્ય ચેતનભાઇ માસ્ટરે કર્યું.

ભારત દેશ એ અનેક વિવિધતાઓ સાથેની બહુ ભાષીય ભાષાઓ ધરાવતો અને અને અલગ અલગ ભિન્નતાઓ ધરાવતી બહુ સંસ્કૃતિને ઉજાગર કરતો દેશ છે જેમાં સમગ્ર દેશના તમામ રાજ્યોની ભાષાઓ અલગ છે અને રાજ્યોમાં પણ અલગ અલગ ગાઉની ભાષા અલગ અલગ રીતે બોલાય છે જેમાં સૌને પોતાની માતૃભાષા સૌથી વહાલી અને પ્રિય હોય છે જેને લઈને રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ અનુસાર દરેક પ્રાથમિક શાળાઓમાં બાળકોનું પ્રાથમિક શિક્ષણ પણ પોતાની માતૃભાષામાં જ થવું જોઈએ જેને લઈને બાળક પોતાની માતૃભાષાને તેમજ પોતાની સંસ્કૃતિને સૌથી શ્રેષ્ઠ રીતે સમજી શકે જે વિચારને રાષ્ટ્રીય ફલક પર મૂકવાના અભિગમ સાથે ગત તારીખ 31/01/2025 થી તારીખ 04/02/2025 ના રોજ મધ્યપ્રદેશના ભોપાલ ખાતે આવેલી આર.આઇ.ઈ. સંસ્થાન ખાતે પાંચ દિવસીય બહુ ભાષીય અને બહુ સંસ્કૃતિ સેમિનારનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું જેમાં દેશના 3 રાજ્યો અને 2 કેન્દ્રશાસિત રાજ્યો મળી કુલ 5 દેશો વચ્ચે યોજાયેલ આ સેમિનારમાં ગુજરાત ભરમાંથી 14 જેટલા શિક્ષકોએ ગુજરાતનું પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું જેમાં પંચમહાલનું પ્રતિનિધિત્વ કરવાનું સૌભાગ્ય હાલોલ (પંચમહાલ) પંથકમાં સતત સેવાકીય પ્રવૃત્તિઓમાં અગ્રેસર રહી સતત તમામ સમાજના હિત અને શિક્ષણના હિતનું કાર્ય કરતા હાલોલ (પંચમહાલ)ના સામાજિક કાર્યકર અને શિક્ષણ જગતના માથાંતા ગણાતા શિક્ષક અને હાલોલ તાલુકાની પ્રતાપપુરા પ્રાથમિક શાળાના આચાર્ય એવા ચેતનકુમાર શાંતિલાલ વાળંદ (માસ્ટર)ને પ્રાપ્ત થયું હતું જેમાં ચેતનકુમારે વાળંદે ભોપાલ ખાતેની આ 5 દિવસીય આ સેમિનારમાં હિસ્સો લઈ રાષ્ટ્રીય કક્ષાના શિક્ષણ જગતના મહાનુભવો આર.આઈ.ઈ. એન.સી.આર.ટી મંડળના ડીન ડો.મંડળ સાહેબ, ડો.સુરેશ મકવાણા તેમજ ગુજરાત રાજ્યના પૂર્વ નિયામક રાઘવજી માધડ શૈક્ષણિક જગતના પાંચ રાજ્યોમાંથી ઉપસ્થિત રહેલા 50 થી વધુ શિક્ષણ વિદોની હાજરીમાં પંચમહાલની દર ચાર ગાઉએ બદલાતી પોતીકી બહુ ભાષિય અને વિભિન્નતામાં પણ ભિન્નતા ધરાવતી પંચમહાલની બહુ સંસ્કૃતિને રાષ્ટ્રીય કક્ષાએ ઉજાગર કરી પંચમહાલ જિલ્લાનું પ્રતિનિધિત્વ કરી પંચમહાલ જિલ્લાનું નામ ભોપાલ ખાતે અંકિત કર્યું હતું જ્યારે પાંચ દિવસીય આ સેમીનારના અંતે ઉપસ્થિત તમામ શિક્ષણ જગતના મહાનુભાવોનું અભિવાદન કરી તેઓનો આભાર વ્યક્ત કરવાનો સૌભાગ્યપૂર્ણ અવસર પણ પંચમહાલનું પ્રતિનિધિત્વ કરતા આચાર્ય અને શિક્ષક એવા ચેતનકુમાર શાંતિલાલ વાળંદ (માસ્ટર)ને પ્રાપ્ત થયું હતું.

નેત્રંગ તાલુકાના બી.આર. સી. કૉ.ઓર્ડીનેટર સુધા વસાવાનું બહુભાષી શિક્ષણમાં યોગદાન

(સદ્દામ મેમણ)

બી.કે.ન્યુઝ : લાલપુર

પ્રાદેશિક શિક્ષણ સંસ્થાન ...પાલ ખાતે બહુભાષી શિક્ષણ ...તર્ગત કાર્યશાળામાં ભરૂચ ...લ્લાના નેત્રંગ તાલુકાના ...સાહી ખંતીલા હંમેશા ...ક્ષણમાં સુધારા અને સંશોધન ...ટે તત્પર રહેતા અને નિતનવા ...નોવેશન કરનાર બી. આર. .. કૉ.ઓર્ડીનેટર સુ સુધાબેન ...તભાઈ વસાવાએ ભરૂચ ...લ્લા શિક્ષણ અને તાલીમ ...વન તરફથી પ્રતિનિધિત્વ કર્યું ...નું.પોતાના જિલ્લામાં બનેલ ...ડ્યુલ બતાવી જિલ્લાની શ્રેષ્ઠ ...મગીરીની ચર્ચા કરી ભરૂચ ...લ્લાનું ગૌરવ વધાર્યુ હતું ...થે જ ગુજરાત રાજ્ય ના ...ત્ત ૧૪ ચુનિંદા વ્યક્તિઓમાં ...ાન મેળવ્યું હતું.રાષ્ટ્રીય ...ક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ અંતર્ગત ...રણ ૧થી૫ નાં બાળકો ...ની ભાષામાં શિક્ષણ મેળવે ... માટે સાહિત્ય નિર્માણ ...ુથી આ કાર્યશાળાનું ...ાયોજન થયું હતું.ગુજરાત, મહારાષ્ટ્ર,દીવ દમણ વગેરેના વ્યક્તિઓએ ભાગ લઈ પ ...ોતાના રાજ્યનું પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું.આ કાર્યશાળા પૂર્ણ થતાં પોતાના તાલુકાના બાળકો માટે દેશી રમતો દ્વારા શિક્ષણ તેમજ વાર્તા તેમજ વિવિધ જોડકણાં,બાળગીતો સ્થાનિક બોલીમાં નિર્મિત કરાવી બાળકોના વિકાસનાં દ્રઢ નિર્ણય સાથે સુધાબેન નેત્રંગ પરત ફર્યા હતા.પ ...ોતાને આ વિશિષ્ટ યોગદાન માટે પોતાના પર વિશ્વાસ કરનાર ડાયેટ ભરૂચના પ્રાચાર્ય રેખાબેન સેજલિયા તેમજ સિનિયર લેકચરર ડી. એસ.ભાભોરસાહેબ તથ... માન.જિલ્લા પ્રા.શિક્ષ... અધિકારી સચિન ભાઈ શા... નો આભાર વ્યક્ત કર્યો હતો આ કાર્ય શાળામાં સમન્વય... એવા ડોક્ટર સુરેશ ભા... મકવાણા સાહેબ ,જ્યોતિ... મેડમ, મિશ્રા સાહેબ તથ... તમામ અધ્યાપક સાહેબ ઓએ... ખૂબ સુંદર માર્ગદર્શન પૂરું ... ...ડી તમામ તાલીમાર્થીઓ... એક નવી દિશા બતાવ... શિક્ષણમાં નવા આયામોન... વાત કરી હતી. અમો તમા... તાલીમાર્થીઓ ભોપાલ... પ્રશિક્ષણ સંસ્થાનો ખૂબ ખૂ... આભાર વ્યક્ત કરીએ છીએ.

कुशल प्रशासक

मुख्य संपादक : रमेश गोपाळराव चित्ते

• दैनिक • नांदेड • वर्ष २ रे • अंक ३०० • बुधवार, १२ फेब्रुवारी २०२५ • RNI Title Code : MAHAHI00001 • पाने ४ • कुशल प्रशासक • किंमत २ रुपये

• Daily • Nanded • Year-02 • Issue No.300 • Wednesday, 12 February 2025 • RNI Title Code : MAHAHI00001 • Page 4 • KUSHAL PRASHASAK • Price 2

भोपाळ येथील बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी केले प्रतिनिधित्व

राष्ट्रीय स्तरावरील चर्चासत्रांमध्ये प्रभावी सादरीकरण, शिक्षिका अनिता दाने यांचा सहभाग

नांदेड- मध्य प्रदेशातील भोपाळ येथे राष्ट्रीय स्तरावरील पाच दिवसीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले. यामध्ये शिक्षिका अनिता दाने यांनी सहभाग नोंदविला.

राष्ट्राच्या वेगवेगळ्या प्रदेशात प्रत्येक प्रदेशाची स्वतःची प्रादेशिक भाषा असते. आपल्या महाराष्ट्रात जशी मराठी भाषा बोलली जाते, तशीच प्रत्येक राज्याची स्वतःची भाषा आपल्या प्रदेशात बोलली जाते. तर मुलांचे प्राथमिक शिक्षण राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार ते मातृभाषेतूनच झाले पाहिजे यासाठी देशातील विविध राज्यांतून भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे पाच दिवस शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते, त्यात कच्छ येथील दोन शिक्षक महाराष्ट्रातील विविध जिल्ह्यातील शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले होते. मराठी भाषा आणि त्याच्या विविध बोलीभाषा देवनागरी लिपीत आणि जगभर लिहिता येतात.

प्राथमिक शिक्षण घेत असताना मुले सहसा आपल्या मातृभाषेत बोलत असतात. आपल्या मराठी भाषेत विविध बोलीभाषा असल्याने मुलांची भाषा समजून घेऊन त्यांना शिक्षण द्यावे लागते. विविध भाषेतील मुले एकत्र एका वर्गात शिक्षण घेत असताना शिक्षकांना त्यांना शिकवणे हे मोठे जिकीरीचे असते. या सर्वांसाठीच बहुभाषिक शिक्षण ही काळाची गरज आहे. हे ओळखून महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या मराठी भाषा आणि त्यातील विविध बोलीभाषेचे प्रतिनिधित्व या प्रशिक्षणात केले. यामध्ये नांदेड जिल्ह्यातील शिक्षिका अनिता दाने यांनी आपल्या नांदेड जिल्ह्याची प्रतिनिधीत्व केले.

पाच दिवसांच्या शिबिरात विविध तज्ज्ञांकडून स्थानिक भाषेबरोबरच मूलभूत शिक्षण कसे द्यावे! उदाहरणार्थ, समज आणि प्रशिक्षण एका विशिष्ट पद्धतीने दिले गेले, ज्यामध्ये डॉ. चित्रा सिंग, डॉ. महेंद्र मिश्रा, डॉ. ज्योती चंदेल, डॉ. राघवजी म धड, डॉ. रुची मिश्रा, डॉ. जगदीप सोनवणे, डॉ. गंगा : मेहतो, डॉ. निलेश चंपानारी आदींनी अतिशय अचूक मार्गदर्शन केले. या प्रशिक्षणाचे अध्यक्ष सुरेश मकवाना यांनी मार्गदर्शनासह संपूर्ण कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन केले.

ओम गॅरेज

दैनिक

बहुरंगी वार्ता

नांदेड | वर्ष १८ वे | मंगळवार ११ फेब्रुवारी २०२५ | अंक १८९ वा | पाने ४ | किंमत २ रुपये

मो.नं.7249653471 7498126166

क्वॉलीटी पेस्ट कंन्ट्रोल

भोपाळ येथील बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी केले प्रतिनिधित्व

प्रतिनिधी, नांदेड

मध्य प्रदेशातील भोपाळ येथे राष्ट्रीय स्तरावरील पाच दिवसीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले आहे.

राष्ट्राच्या वेगवेगळ्या प्रदेशात प्रत्येक प्रदेशाची स्वतःची प्रादेशिक भाषा असते. आपल्या महाराष्ट्रात जशी मराठी भाषा

बोलली जाते. तशीच प्रत्येक राज्याची स्वतःची भाषा आपल्या प्रदेशात बोलली जाते. तर मुलांचे प्राथमिक शिक्षण राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार ते मातृभाषेतूनच झाले पाहिजे, यासाठी देशातील विविध राज्यांतून भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे पाच दिवस शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते. त्यात कच्छ येथील दोन शिक्षक महाराष्ट्रातल्या विविध जिल्ह्यातील शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले होते.

मराठी भाषा आणि त्याच्या विविध बोलीभाषा देवनागरी लिपीत आणि जगभर लिहिता येतात. प्राथमिक शिक्षण घेत असताना मुले सहसा आपल्या मातृभाषेत बोलत असतात आपल्या मराठी भाषेत विविध बोलीभाषा असल्याने मुलांची भाषा समजून घेऊन त्यांना शिक्षण द्यावे लागते. विविध भाषेतील मुले एकत्र एका वर्गात शिक्षण घेत असताना शिक्षकांना त्यांना शिकवणे ही मोठे जिकरीचे असते. या सर्वांसाठीच बहुभाषिक शिक्षण ही काळाची गरज आहे. हे ओळखून महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या मराठी भाषा आणि त्यातील विविध बोलीभाषा प्रतिनिधित्व या प्रशिक्षणात केले. यामध्ये नांदेड जिल्ह्यातील अनिता दाणे मॅडम यांनी आपल्या नांदेड जिल्ह्याची प्रतिनिधीत्व केले.

पाच दिवसांच्या शिबिरात विविध तज्ज्ञांकडून स्थानिक भाषेबरोबरच मूलभूत शिक्षण कसे द्यावे. उदाहरणार्थ, समज आणि प्रशिक्षण एका विशिष्ट पद्धतीने दिले गेले. ज्यामध्ये डॉ.चित्रा सिंग, डॉ.महेंद्र मिश्रा, डॉ.ज्योती चंदेल, डॉ.राघवजी मधड, डॉ.रुची मिश्रा, डॉ.जगदीप सोनवणे, डॉ.गंगा मेहतो, डॉ.निलेश चंपानारी आदींनी अतिशय अचूक मार्गदर्शन केले.

या प्रशिक्षणाचे अध्यक्ष सुरेश मकवाना यांनी मार्गदर्शनासह संपूर्ण कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन केले.

ભોપાલમાં બહુભાગીય સેમિનારમાં સાતેમના શિક્ષિકાએ પ્રતિનિધિત્વ કર્યું

। નવસારી ।

ભોપાલ ખાતે યોજાયેલી ક્ષેત્રીય શિક્ષા સંસ્થાન બહુભાગીય NCERT દિલ્હીના Regional Institute of Education, રાષ્ટ્રીય કક્ષાના પાંચ દિવસીય સેમિનારમાં ગુજરાત રાજ્યના કુલ ૧૪ શિક્ષકો પૈકી નવસારી જિલ્લાની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષિકા રૂપલ અજિતભાઈ દીક્ષિતએ પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું. આ સેમિનારમાં ભારત દેશના કુલ પાંચ રાજ્યો ગુજરાત ગુજરાત, મહારાષ્ટ્ર, મધ્યપ્રદેશ, છત્તીસગઢ અને દીવ, દમણ, દાદરા નગર હવેલી એમ કુલ ચાર રાજ્યો અને એક કેન્દ્રશાસિત પ્રદેશ માટેની બહુભાષી શિક્ષણમાં પશ્ચિમ ભારતમાં પ્રાથમિક અને પૂર્વ પ્રાથમિક સ્તરે મુખ્ય સંસાધન વ્યક્તિઓની તાલીમ અંતર્ગત કેન્દ્ર અને રાજ્ય સરકાર દ્વારા ભારત દેશની તમામ પ્રાદેશિક ભાષાઓને બંધારણની આઠમી અનુસૂચિમાં ૧૬૩૨ ભાષાઓને સમાવિષ્ટ કરી ભાષા શિક્ષણને વધુ સુંદર બનાવવાનો એક મહાપ્રયાસ કરવામાં આવ્યો છે. જેમાંથી પ્રિન્ટ મીડિયામાં ૮૭થી વધુ ભાષાઓ અને રેડિયોમાં ૭૧ ભાષાઓનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. દેશભરમાં ભારતીય ભાષાઓના અધ્યયનને પ્રોત્સાહિત કરવા માટે તેમજ વિવિધ ભાષાઓને શીખવવા માટે તથા ભાષા શિક્ષણને લોકપ્રિય બનાવવા માટેનું ગહન અને ઊંડાણપૂર્વકનું ચિંતનાત્મક શિક્ષણ આપવામાં આવ્યું હતું. જેમાં નવસારી જિલ્લાના નવસારી તાલુકાની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા રૂપલ અજીતભાઈ દીક્ષિતે પોતાની સક્રિય સહભાગીદારી નોંધાવીને નવસારી જિલ્લા, તાલુકા અને શાળાનું અસરકારક પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું.

સંદેશ

BSE 77,860.19 (197.97)
NSE 23,559.95 (43.40)
डॉलर 87.79
युरो 90.52
सोने (१० ग्रॅम)
24K ₹ 86,700
22K ₹ 79,480

पुरोगामी विचाराचे
एकमत
संस्थापक : विलासराव देशमुख

नांदेड । सोमवार, दिनांक १० फेब्रुवारी २०२५ | वर्ष १३ वे । अंक : ४६ ■ पाने ८ ■ किंमत : ४ रुपये

epaper http://www.dainikekmat.com

कुष्ठरुग्णांना प्रतिव्यक्ती ६ हजार रुपये अनुदान देणार

विश्वांभर बसवंते

बहुभाषिकांच्या चर्चासत्रात शिक्षकांचे प्रभावी सादरीकरण

कंधार : मध्य प्रदेशातील भोपाळ येथे राष्ट्रीय स्तरावरील पाच दिवसीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व करून, राष्ट्रीय स्तरावरील चर्चासत्रामध्ये प्रभावी सादरीकरण करत महाराष्ट्र टीमने उत्कृष्ट कामगिरी केल्यामुळे जिल्ह्यातील शिक्षण प्रेमी मध्ये आनंदाचे वातावरण पसरले आहे.

राष्ट्राच्या वेगवेगळ्या प्रदेशात प्रत्येक प्रदेशाची स्वतःची प्रादेशिक भाषा असते. आपल्या महाराष्ट्रात जशी मराठी भाषा बोलली जाते, तशीच प्रत्येक राज्याची स्वतःची भाषा आपल्या प्रदेशात बोलली जाते. तर मुलांचे प्राथमिक शिक्षण

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार ते मातृभाषेतूनच झाले पाहिजे, यासाठी देशातील विविध राज्यांतून भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे पाच दिवस शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते, त्यात कच्छ येथील दोन शिक्षक महाराष्ट्रातल्या विविध जिल्ह्यातील शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले होते . मराठी भाषा आणि त्याच्या विविध बोलीभाषा देवनागरी लिपीत आणि जगभर लिहिता येतात.

प्राथमिक शिक्षण घेत असताना मुले सहसा आपल्या मातृभाषेत बोलत असतात आपल्या मराठी भाषेत विविध बोलीभाषा असल्याने मुलांची भाषा समजून घेऊन त्यांना शिक्षण द्यावे लागते .विविध भाषेतील मुले एकत्र एका वर्गात शिक्षण घेत असताना शिक्षकांना त्यांना शिकवणे ही मोठे जिकरीचे काम असते. या सर्वांसाठीच बहुभाषिक शिक्षण ही काळाची गरज आहे .हे ओळखून महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या मराठी भाषा आणि त्यातील विविध बोलीभाषा प्रतिनिधित्व या प्रशिक्षणात केले.यामध्ये नदिड जिल्ह्यातील कंधार तालुक्यातील धमार्पुरी तांडा येथे जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळेत कार्यरत असलेल्या शिक्षिका अनिता दाणे(जुंबाड)मॅडम यांनी आपल्या नदिड जिल्ह्याचे प्रतिनिधीत्व केले. पाच दिवसांच्या शिबिरात विविध तज्ज्ञांकडून स्थानिक भाषेबरोबरच मूलभूत शिक्षण कसे द्यावे! उदाहरणार्थ, समज आणि प्रशिक्षण एका विशिष्ट पद्धतीने दिले गेले, ज्यामध्ये डॉ. चित्रा सिंग, डॉ.महेंद्र मिश्रा,डॉ. ज्योती चंदेल,डॉ. राघवजी मधड, डॉ. रुची मिश्रा,डॉ.जगदीप सोनवणे,डॉ.गंगा मेहतो, डॉ. निलेश चंपानारी आदींनी अतिशय अचूक मार्गदर्शन केले तर या प्रशिक्षणाचे अध्यक्ष सुरेश मकवाना यांनी मार्गदर्शनासह संपूर्ण कार्यक्रमाचे उत्कृष्ट सूत्रसंचालन केले.

भोपाळ (मध्यप्रदेश) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानाच्या बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील १० शिक्षकांनी केले प्रतिनिधित्व .

राष्ट्रीय स्तरावरील चर्चासत्रांमध्ये प्रभावी सादरीकरण ; महाराष्ट्र टिमने केली उत्कृष्ट कामगिरी .

सांगोला/प्रतिनिधी :

क्षत्रिय शिक्षा संस्थान भोपाळ मध्य प्रदेशातील एन सी ई आर टी राष्ट्रीय स्तरावरील पाच दिवसीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील १० शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले.

राष्ट्राच्या वेगवेगळ्या प्रदेशात प्रत्येक प्रदेशाची स्वतःची प्रादेशिक भाषा असते. आपल्या महाराष्ट्रात जशी मराठी भाषा बोलली जाते, तशीच प्रत्येक राज्याची स्वतःची भाषा आपल्या प्रदेशात बोलली जाते. तर मुलांचे प्राथमिक शिक्षण

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार ते मातृभाषेतूनच झाले पाहिजे, यासाठी देशातील विविध राज्यांतून भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे पाच दिवस शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते, महाराष्ट्रातल्या विविध जिल्ह्यातील शिक्षकांनी प्रतिनिधित्व केले होते . मराठी भाषा आणि त्याच्या विविध बोलीभाषा देवनागरी लिपीत आणि जगभर लिहिता येतात.

प्राथमिक शिक्षण घेत असताना मुले सहसा आपल्या मातृभाषेत बोलत असतात आपल्या मराठी भाषेत विविध बोलीभाषा असल्याने मुलांची भाषा समजून घेऊन त्यांना शिक्षण द्यावे लागते .विविध भाषेतील मुले एकत्र एका वर्गात शिक्षण घेत असताना शिक्षकांना त्यांना शिकवणे ही मोठे जिकिरीचे असते .या सर्वांसाठीच बहुभाषिक शिक्षण ही काळाची गरज आहे .हे ओळखून महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या मराठी भाषा आणि त्यातील विविध बोलीभाषा प्रतिनिधित्व या प्रशिक्षणात केले. यामध्ये सोलापूर जिल्ह्यातील रयत शिक्षण संस्थेच्या, मांजरी हायस्कूल,मांजरी येथील उपशिक्षक प्रमोद डोंबे यांनी आपल्या सोलापूर जिल्ह्याचे प्रतिनिधीत्व केले. यामध्ये अहवाल सादरीकरण प्रादेशिक भाषा व विविध बोलीभाषातील गटकार्य सादरीकरण अतिशय प्रभाविपणे मांडले .

पाच दिवसांच्या शिबिरात विविध तज्ज्ञांकडून स्थानिक भाषेबरोबरच मूलभूत शिक्षण कसे द्यावे! उदाहरणार्थ, समज आणि प्रशिक्षण एका विशिष्ट पद्धतीने दिले गेले, ज्यामध्ये ओरिसा, दिल्ली, चेन्नई येथील डॉ. चित्रा सिंग , डॉ. महेंद्र मिश्रा, डॉ. ज्योती चंदेल, डॉ. राघवजी मधड, डॉ. रुची मिश्रा, डॉ. जगदीप सोनवणे, डॉ. गंगा : मेहतो, डॉ. निलेश चंपानारी आदींनी अतिशय अचूक मार्गदर्शन केले .या प्रशिक्षणाचे अध्यक्ष सुरेश मकवाना यांनी मार्गदर्शनासह संपूर्ण कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन केले.

૪

દિવ્ય પ્રભાત

તા.૧૦-૨-૨૦૨૫, સોમવાર

વર્ષ:૧૬, અંક :૧૧

ક્ષેત્રીય શિક્ષા સંસ્થાન ભોપાલમાં બહુભાષીય સેમિનારમાં નવસારીની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા રૂપલ દીક્ષિતે પ્રતિનિધિત્વ કર્યુ

NCFRT દિલ્હીના Regional Institute of Education ના રાષ્ટ્રીય કક્ષાના પાંચ દિવસીય સેમિનારમાં ગુજરાત રાજ્યના કુલ ૧૪ શિક્ષકો પૈકી રૂપલ અજીત દીક્ષિતે પ્રતિનિધિત્વ કર્યુ

દિવ્ય પ્રભાત ન્યુઝ, મરોલી બજાર

NCERT દિલ્હીના Regional Institute of Education, ભોપાલ કેન્દ્ર ખાતે રાષ્ટ્રીય કક્ષાના પાંચ દિવસીય સેમિનારમાં ગુજરાત રાજ્યના કુલ ૧૪ શિક્ષકો પૈકી નવસારી જિલ્લાની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા રૂપલ અજિતભાઈ દીક્ષિતએ પ્રતિનિધિત્વ કર્યું.

ગત દિવસોમાં તારીખ ૩૧ ૧ ૨૦૨૫ થી ૪ ૨ ૨૦૨૫ એમ કુલ પાંચ દિવસો દરમિયાન ભારત દેશના કુલ પાંચ રાજ્યો ગુજરાત ગુજરાત, મહારાષ્ટ્ર મધ્યપ્રદેશ છત્તીસગઢ અને દીવ દમણ દાદરા નગર હવેલી એમ કુલ ચાર રાજ્યો અને એક કેન્દ્રશાસિત પ્રદેશ માટેની બહુભાષી શિક્ષણમાં પશ્ચિમ ભારતમાં પ્રાથમિક અને પૂર્વ પ્રાથમિક સ્તરે મુખ્ય સંસાધન વ્યક્તિઓની તાલીમ અંતર્ગત કેન્દ્ર અને રાજ્ય સરકાર દ્વારા ભારત દેશની તમામ પ્રાદેશિક ભાષાઓને બંધારણની આઠમી અનુસુચિમાં ૧૯૩૨ ભાષાઓને સમાવિષ્ટ કરી ભાષા શિક્ષણને વધુ સુંદર બનાવવાનો એક મહાપ્રયાસ કરવામાં આવ્યો છે. જેમાંથી પ્રિન્ટ મીડિયામાં ૮૭ થી વધુ ભાષાઓ અને રેડિયોમાં ૭૧ ભાષાઓનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. ફક્ત ૪૭ ભાષાનો

શાળાઓમાં પઠન પાઠનના રૂપમાં પ્રયોગ કરવામાં આવે છે અને ફક્ત ૨૨ ભાષાઓ સંવિધાન દ્વારા માન્ય ગણવામાં આવી છે. વિશેષ રૂપે ભારતના વિભિન્ન રાજયમાં ત્રિ-ભાષા સૂત્રને અપનાવવા માટે તેમજ દેશભરમાં ભારતીય ભાષાઓના અધ્યયનને પ્રોત્સાહિત કરવા માટે તેમજ વિવિધ ભાષાઓને શીખવવા માટે તથા ભાષા શિક્ષણને લોકપ્રિય બનાવવા માટેનું ગહન અને ઊંડાણપૂર્વકનું ચિંતનાત્મક શિક્ષણ આપવામાં આવ્યું હતું. જેનો મુખ્ય ઉદેશ બાળકો પોતાની માતૃભાષામાં શિક્ષણ મેળવે અને ત્યારબાદ જ માન્ય ભાષા ઉપર જાય તથા તેઓ પોતાની સ્થાનિક બોલીઓ, ભાષાઓ અને સંસ્કૃતિના વારસાનું જતન કરી શકે અને તેને ભૂલી ન જાય એ બાબત ઉપર વધુ ભાર મૂકવામાં આવ્યો હતો. જેમાં નવસારી જિલ્લાના નવસારી તાલુકાની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા રૂપલ અજીતભાઈ દીક્ષિતે પોતાની સક્રિય સહભાગીદારી નોંધાવીને નવસારી જિલ્લા,તાલુકા અને શાળાનું અસરકારક પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું.

પ્રસ્તુત સેમિનારમાં નવસારી જિલ્લાનું પ્રતિનિધિત્વ કરવા બદલ જિલ્લા શિક્ષણ અને તાલીમ ભવનના પ્રાચાર્યશ્રી યોગેશભાઈ તથા લેક્ચર રાધાબહેન, જિલ્લા પ્રાથમિક શિક્ષણ અધિકારીશ્રી અરુણ અગ્રવાલ સાહેબ, તાલુકા પ્રાથમિક શિક્ષણ અધિકારીશ્રી વિશાલસિંહભાઈ, બી.આર.સી કો-ઓર્ડિનેટરશ્રી શશીકાંતભાઈ ટંડેલ, સી.આર.સી કો-ઓર્ડિનેટરશ્રી સુમનભાઈ, સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના મુખ્ય શિક્ષકશ્રી હિતેશભાઈ રાઠોડ અને શાળા પરિવાર આનંદ તથા ગૌરવની લાગણી અનુભવે છે.

નેત્રંગ તાલુકાના બી.આર. સી. કૉ.ઓર્ડીનેટર સુધા વસાવાનું બહુભાષી શિક્ષણમાં યોગદાન

(સદામ મેમણ)

બી.કે.ન્યુઝ : લાલપુર

પ્રાદેશિક શિક્ષણ સંસ્થાન ોપાલ ખાતે બહુભાષી શિક્ષણ ંતર્ગત કાર્યશાળામાં ભરૂચ જલ્લાના નેત્રંગ તાલુકાના ત્સાહી ખંતીલા હંમેશા ાક્ષણમાં સુધારા અને સંશોધન ાટે તત્પર રહેતા અને નિતનવા નોવેશન કરનાર બી. આર. ી. કોં.ઓર્ડીનેટર સુ સુધાબેન સંતભાઈ વસાવાએ ભરૂચ જલ્લા શિક્ષણ અને તાલીમ ાવન તરફથી પ્રતિનિધિત્વ કર્યું તું.પોતાના જિલ્લામાં બનેલ ાડ્યુલ બતાવી જિલ્લાની શ્રેષ્ઠ ામગીરીની ચર્ચા કરી ભરૂચ જલ્લાનું ગૌરવ વધાર્યું હતું ાથે જ ગુજરાત રાજય ના ક્ત ૧૪ ચુનિંદા વ્યક્તિઓમાં ાન મેળવ્યું હતું.રાષ્ટ્રીય ાક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ અંતર્ગત ારણ ૧થી૫ નાં બાળકો રની ભાષામાં શિક્ષણ મેળવે ં માટે સાહિત્ય નિર્માણ તુથી આ કાર્યશાળાનું ાયોજન થયું હતું.ગુજરાત, મહારાષ્ટ્ર,દીવ દમણ વગેરેના વ્યક્તિઓએ ભાગ લઈ પોતાના રાજયનું પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું.આ કાર્યશાળા પૂર્ણ થતાં પોતાના તાલુકાના બાળકો માટે દેશી રમતો દ્વારા શિક્ષણ તેમજ વાર્તા તેમજ વિવિધ જોડકણાં,બાળગીતો સ્થાનિક બોલીમાં નિર્મિત કરાવી બાળકોના વિકાસનાં દ્રઢ નિર્ણય સાથે સુધાબેન નેત્રંગ પરત ફર્યા હતા.પોતાને આ વિશિષ્ટ યોગદાન માટે પોતાના પર વિશ્વાસ કરનાર ડાયેટ ભરચના પ્રાચાર્ય રેખાબેન સેજલિયા તેમજ સિનિયર લેકચરર ડી. એસ.ભાભોરસાહેબ તથા માન.જિલ્લા પ્રા.શિક્ષણ અધિકારી સચિન ભાઈ શાહ નો આભાર વ્યક્ત કર્યો હતો. આ કાર્ય શાળામાં સમન્વયક એવા ડોક્ટર સુરેશ ભાઈ મકવાણા સાહેબ ,જયોતિ મેડમ, મિશ્રા સાહેબ તથા તમામ અધ્યાપક સાહેબ ઓએ ખૂબ સુંદર માર્ગદર્શન પૂરું પાડી તમામ તાલીમાર્થીઓને એક નવી દિશા બતાવી શિક્ષણમાં નવા આયામોની વાત કરી હતી. અમો તમામ તાલીમાર્થીઓ ભોપાલ પ્રશિક્ષણ સંસ્થાનો ખૂબ ખૂબ આભાર વ્યક્ત કરીએ છીએ.

ગોળના પાણીથી મરે તેને ઝેર શું કરવા આપવું જોઈએ ?

સવારનો ઊઘડતો પહોર હતો. નવશેકું વાતાવરણ જીવમાત્રને હૂંફની ફૂંક મારી રહ્યું હતું.

આવા સમયે પ્રભાત નીકળ્યો હતો. તે ગામનો સરકારી કારભારી હોવાથી સરપંચના ઘરે વારનવાર જવાનું થયા કરતું હતું. તેમાં ગઈ ધુળેટીના વસે કોઈ કામ નિમિત્તે પ્રભાત તેની ડેલીમાં પ્રવેશી રહ્યો તો. ત્યાં હાથમાં કેસૂડાના રંગનો વાટકો ભરીને ઊભેલી ર એમ સમજી કે દિયર આવ્યો છે તે ઝટ રોળી દઉં, ણ સામે પ્રભાત હતો. હાથ ક્ષણભર અટક્યો ને પછી ગની છાલક ખુદને ભીતરથી રંગી ગઈ. બંને આંખો ડી એકબીજાને જોઈ રહ્યાં હતાં ને કદાચ પહેલીવાર જ મ મનભરી એકબીજાને જોયાં હતાં. આ દોહ્યલું દૃશ્ય જર હતાં તે સભ્યોની નજરના કેમેરામાં કેદ થઈ ગયું તું, પણ ભૂલ સમજી ધ્યાને ધર્યું નહોતું. પછીથી મોટા ોરડે પ્રભાતની નાની-મોટી અવરજવર વધી ગઈ હતી. જાહેરમાં વાત ન થાય તો મોબાઈલથી વાત કરી લેતાં થયાં હતાં ને પછી તો વાત છૂટાછેડા લઈ લગ્ન કરી લેવાં ત્યાં સુધી પહોંચી ગઈ હતી.

પ્રભાત જ નહીં, જગત સમજતું હતું અહીંના માયાળુ મનેખ રીઝે તો જીવ દઈ દે ને ખીજે તો જીવ લઈ લે, વચ્ચેનો કોઈ વિકલ્પ જ નહિ. હૈયાંની હોળીને લોહિયાળ થતાં સહેજ પણ વાર લાગે નહીં. બંને જાણે છે, સમજે છે, પણ દિલની આગ, બાગમાં કે હાથમાં રહી નહોતી.

કોઈએ પ્રભાતને આવીને કહ્યું હતું: 'સરપંચ આપને બોલાવે છે.' પ્રભાતને થયું, ચાલો સીધું જ કેસરને મળી શકાશે. તે ઝડપથી ડેલીમાં પ્રવેશ્યો હતો. કેસર માથે ઓઢી ઓસરીની કોર પર ઊભી હતી.

સરપંચે સહેજ ખોંખારો ખાઈને કહ્યું હતું: 'મંત્રીસા'બને પાણી આપો.' પછી ઉમેર્યું હતું: 'પાછાં ભૂલથી રંગ છાંટી નો દેતાં!' કેસરને હોળી જેવી ઝાળ લાગી જતાં ભડભડ સળગવા લાગી હતી. મનોમન ગાંઠ વાળી લીધી: 'હવે તો થાય તે કરી લે, બાકી ભૂલ કોને કહેવાય તે હવે કરી બતાવીશ.'

ચંદરવો

રાઘવજી માધડ

કેસરને હાડોહાડ લાગી ગયું. તેના અસ્તિત્વના પાયામાં ઘા પડ્યો હતો. સ્વમાન ઘવાયું હતું.

આ પ્રેમપ્રકરણ કુટુંબની આબરૂનો સવાલ બનીને ઊભો રહ્યો હતો. કરવું શું? ઘર-પરિવાર માટે ચિંતાનો વિષય થઈ પડ્યો હતો. અહીંની રીત મુજબ સીધો ને સરળ એક જ રસ્તો હતો કે, પ્રભાતનો કાંટો કાઢી નાખી લાશ સગેવગે કરી દેવી. ન રહે બાંસ કે ન બજે બાંસુરી, પણ આમ કર્યા પછી કેસર ચૂપ રહેશે તેની કોઈ ગેરંટી નહોતી, તેથી લાજ અને લક્ષ્મી બંને ખોવાં કુટુંબ તૈયાર નહોતું. તો પછી આનો ઉપાય શું? સાપે છછુંદર ગળ્યા જેવી સ્થિતિ હતી. પણ ગામના મુખીએ મારગ શોધી લીધો હતો. તેમણે આવાં તો કેટલાંય કોઠાંકબાડાં કરી લીધાં હતાં, તેથી તેમણે સરપંચને કાનમાં ફૂંક મારી બરાબર સમજાવી દીધા હતા.

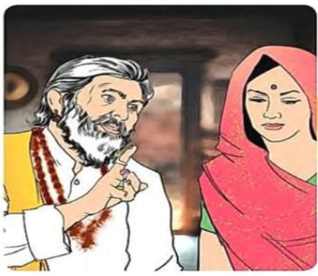

કેસરને એક અલાયદા ઓરડામાં બોલાવીને સરપંચે જ સીધી વાત કરતાં કહ્યું હતું: 'બેટા! સૂરજ છાબડે ઢાંક્યો ઢંકાતો નથી. તમે ભણેલાં ને સમજેલાં છો.' ઘડીભર સન્નાટો છવાઈ ગયો હતો, પણ કેસરને અગાઉથી જ અંદાજ આવી ગયો હતો એટલે અચરજ થયું નહોતું. તે એમ જ અડોલ ને અબોલ ઊભી રહી હતી.

અમને એક સવાલનો જવાબ આપો. સરપંચ ગળં ખંખેરીને બોલ્યા હતા: 'આ મંત્રી પ્રભાતમાં એવું શું છે, જે અમારા દીકરામાં નથી!'

એક ઘા ને બે કટકા કરનાર સરપંચને તો કલ્પના પણ નહોતી કે આવું ઢીલું ને વીલું બોલવાના દા'ડા આવશે. જે થાવું હોય તે થાય, પરિણામની કોને પરવા છે. આવું તડ ને ફડ કરી નાખે, પણ ખુદ મુખીએ તેમને નિરાંતે સમજાવ્યા હતા: 'ભાઈ, સમય બદલાણો છે ને કોઈ ગોળના પાણીએ મરતું હોય તો ઝેર શું કરવા પાવું જોઈએ!?' આ બાજુ કેસર સમસમી ગઈ હતી.

> **અંતરમાંથી ઊઠેલા આ સવાલનો જવાબ પણ કેસર પાસે નહોતો**

કેસર પાસે જવાબ હાથવગો નહોતો. પોતાના પતિ વરજાંગમાં શું નથી ને પ્રભાતમાં એવું શું છે? આવી સરખામણી તો ક્યારેય કરી નહોતી. તેને તો એક જ હતું કે, 'હું જે ઝંખું છું તે પ્રભાતમાં કે તેની પાસે છે.'

'તો પછી તું શું ઝંખે છે એ કહે?' અંતરમાંથી ઊઠેલા આ સવાલનો જવાબ પણ કેસર પાસે નહોતો.

પછી પ્રભાતને વ્યંગમાં પૂછ્યું હતું: 'તમે બંને પરણી જાવાનાં છો એમ જ ને!'

સરપંચે કહ્યું હતું: 'મંત્રી, તમને પૂછવું છે કે જે સ્ત્રી આવો હર્યોભર્યો સંસાર તોડી, છોડીને હાલી આવે ઈ બીજે સ્થિર થાય ખરી?' ત્યાં મુખીએ ઉમેરો કરતાં કહ્યું: 'ને જે ઈના સંતાનની નો થાય ઈ બીજાની થાય?'

સવાલ પ્રભાતને છાતી સોંસરવો ઊતરીને ફફડાવી ગયો હતો. તે આંખો ફાડી પ્રશ્નાર્થભરી નજરે સરપંચ સામે તાકી રહ્યો હતો. સરપંચે પ્રભાતના ખભા પર હાથ મૂકી સાવ હળવેકથી કહ્યું હતું: 'આજે જ નીકળી જાવ ને હવે પરણ્યા વગર્ય પાછાં નો આવતાં.'

ત્રણેય ઊભાં થઈને બહાર આવ્યાં હતાં ત્યારે ચોકમાં ધુળેટીનો તહેવાર બરાબર રંગમાં આવ્યો હતો.

ra madhad13@yahoo.com

SANDESH

આનંદમય શિક્ષણ માટે માતૃભાષામાં અભ્યાસ જરૂરી

છોટાઉદેપુરના શિક્ષકનું RIE શિક્ષા સંસ્થાન ભોપાલ ખાતે પ્રતિનિધિત્વ

ગુનાટાના BRC શિક્ષક દિનેશ રાઠવાએ સ્થાનિક બોલીની રજૂઆત કરી

| છોટાઉદેપુર |

છોટાઉદેપુર જિલ્લાના ગુનાટા ગામના શિક્ષક અને સીઆરસી કોર્ડીનેટર દિનેશભાઈ વી રાઠવા એ. ક્ષેત્રીય શિક્ષક સંસ્થાન (RIE) ભોપાલમાં છોટાઉદેપુર જિલ્લાના શિક્ષકે જિલ્લાનું પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું.

દેશના જુદા જુદા પ્રદેશમાં દરેક વિસ્તારની પોતાની બોલી હોય છે. જેમાં છોટાઉદેપુરમાં ક્ષરાઠવાખ બોલી બોલાય છે. ત્યારે બાળકોને પ્રારંભિક શિક્ષણ માં તકલીફ પડતી હોય છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિના પ્રકરણ -૪માં જણાવ્યા મુજબ શરૂઆતી ધોરણમાં બાળકો સ્થાનિક બોલીમાં અભ્યાસ કરે છે. જે અનુસંધાને અન્ય જિલ્લામાંથી આવેલા શિક્ષકો સ્થાનિક રાઠવી બોલી ન જાણતા હોય શિક્ષક અને વિદ્યાર્થીને શિક્ષણ કાર્યમાં તકલીફ પડતી હોય જેથી પ્રારંભિક શિક્ષણ સ્થાનિક બોલીમાં શિક્ષકો વાત કરે કે, સ્થાનિક બોલી ના શબ્દોનો ઉપયોગ કરે તો બાળકો ઝડપથી સમજી શકે અને પોતાના પણું લાગે છે. અને આનંદમય શિક્ષણ મેળવી શકે તે માટે માતૃભાષામાં જ શિક્ષણ થવું જોઈએ. એ અનુસંધાને દેશના જુદા જુદા રાજ્યોમાંથી પાંચ દિવસ માટે ભોપાલ (મધ્ય પ્રદેશ) ખાતે પાંચ દિવસીય કાર્યશાળા યોજાઈ હતી. જેમાં રાઠવા બોલીની વાત દિનેશભાઈ વી રાઠવા એ મૂકી હતી. તેઓએ રાઠવી બોલીમાં પોતાનો પરિચય આપ્યો હતો. શૈક્ષણિક વાર્તા અને છોટાઉદેપુર જિલ્લામાં થતા મહોડા અને કેસુડાના વૃક્ષ અંગે ચર્ચા કરી હતી.

દિનેશભાઈ રાઠવા બાલવાટિકા અને ધો.૧,૨ના શિક્ષકો માટે સ્થાનિક સાહિત્ય તૈયાર કરવામાં મહત્વની ભૂમિકા ભજવી છે. ભોપાલથી આવ્યા બાદ હાલમાં પણ જિલ્લા શિક્ષણ અને તાલીમ ભવન વડોદરા ખાતે સ્થાનિક સાહિત્ય તૈયાર કરી રહ્યા છે. આગામી સમયમાં રાઠવી બોલી અંગે જી.સી.ઈ.આર.ટી ગાંધીનગર ખાતે સ્થાનિક બોલી અંગે પોતાની વાત રજૂ કરશે.

પ્રજા પંખ
ગુજરાતી સાપ્તાહિક- સુરત
PRAJA PANKH (GUJARATI WEEKLY-SURAT)
Date 12/02/2025 India Gujarat Surat

બહુભાષિય સેમિનાર ભોપાલમાં યોજાયો

ક્ષેત્રીય શિક્ષા સંસ્થાન ભોપાલમાં બહુભાષીય સેમિનારમાં નવસારીના શિક્ષિકાએ પ્રતિનિધિત્વ કર્યું.

rakash Bhavsar

રાષ્ટ્રીય કક્ષાના પાંચ દિવસીય સેમિનારમાં નવસારીની શિક્ષિકા રૂપલ દીક્ષિત એ ભોપાલમાં પ્રતિનિધિત્વ કરી પ્રમાણ પત્ર મેળવ્યું.

ducation પ્રજા પંખ વસારી:NCERT દિલ્હીના Regional nstitute of Education, ભોપાલ ન્દ્ર ખાતે રાષ્ટ્રીય કક્ષાના પાંચ દિવસીય મિનારમાં ગુજરાત રાજ્યના કુલ 14 ક્ષકો પૈકી નવસારી જિલ્લાની સાતેમ ાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા પલ અજિતભાઈ દીક્ષિત જેઓ એ ોપાલમાં પ્રતિનિધિત્વ કર્યું.

ત દિવસોમાં તારીખ 31 1 2025 થી 4 2 025 એમ કુલ પાંચ દિવસો દરમિયાન ારત દેશના કુલ પાંચ રાજ્યો ગુજરાત ુજરાત, મહારાષ્ટ્ર, મધ્યપ્રદેશ, છત્તીસગઢ ને દીવ દમણ દાદરા નગર હવેલી એમ કુલ ાર રાજ્યો અને એક કેન્દ્રશાસિત પ્રદેશ ાટેની બહુભાષી શિક્ષણમાં પશ્ચિમ ારતમાં પ્રાથમિક અને પૂર્વ પ્રાથમિક સ્તરે ુખ્ય સંસાધન વ્યક્તિઓની તાલીમ ંતર્ગત કેન્દ્ર અને રાજ્ય સરકાર દ્વારા ભારત શની તમામ પ્રાદેશિક ભાષાઓને ંધારણની આઠમી અનુસૂચિમાં 1632 ાષાઓને સમાવિષ્ટ કરી ભાષા શિક્ષણને ધુ સુંદર બનાવવાનો એક મહાપ્રયાસ રવામાં આવ્યો છે, જેમાંથી પ્રિન્ટ મીડિયામાં 7 થી વધુ ભાષાઓ અને રેડિયોમાં 71 ાષાઓનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. ક્ત 47 ભાષાનો શાળાઓમાં પઠન ાઠનના રૂપમાં પ્રયોગ કરવામાં આવે છે અને ક્ત 22 ભાષાઓ સંવિધાન દ્વારા માન્ય ણવામાં આવી છે.

વિશેષ રૂપે ભારતના વિભિન્ન રાજ્યમાં ત્રિ-ભાષા સૂત્રને અપનાવવા માટે તેમજ દેશભરમાં ભારતીય ભાષાઓના અધ્યયનને પ્રોત્સાહિત કરવા માટે તેમજ વિવિધ ભાષાઓને શીખવવા માટે તથા ભાષા શિક્ષણને લોકપ્રિય બનાવવા માટેનું ગહન અને ઊંડાણપૂર્વકનું ચિંતનાત્મક શિક્ષણ આપવામાં આવ્યું હતું, જેનો મુખ્ય ઉદ્દેશ બાળકો પોતાની માતૃભાષામાં શિક્ષણ મેળવે અને ત્યારબાદ જ માન્ય ભાષા ઉપર જાય તથા તેઓ પોતાની સ્થાનિક બોલીઓ, ભાષાઓ અને સંસ્કૃતિના વારસાનું જતન કરી શકે અને તેને ભૂલી ન જાય એ બાબત ઉપર વધુ ભાર મૂકવામાં આવ્યો હતો. જેમાં નવસારી જિલ્લાના નવસારી તાલુકાની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા રૂપલ અજીતભાઈ દીક્ષિતે પોતાની સક્રિય સહભાગીદારી નોંધાવીને નવસારી જિલ્લા,તાલુકા અને શાળાનું અસરકારક પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું. પ્રસ્તુત સેમિનારમાં નવસારી જિલ્લાનું પ્રતિનિધિત્વ કરવા બદલ જિલ્લા શિક્ષણ અને તાલીમ ભવનના પ્રાચાર્યશ્રી યોગેશભાઈ પટેલ તથા લેક્ચર રાધાબહેન જિલ્લા પ્રાથમિક શિક્ષણ અધિકારીશ્રી અરુણ અગ્રવાલ સાહેબ, તાલુકા પ્રાથમિક શિક્ષણ અધિકારીશ્રી વિશાલસિંહભાઈ, બી.આર. સી કો-ઓર્ડીનેટરશ્રી શશીકાંતભાઈ ટંડેલ, સી.આર.સી કો-ઓર્ડીનેટરશ્રી સુમનભાઈ, સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના મુખ્ય શિક્ષકશ્રી હિતેશભાઈ રાઠોડ અને શાળા પરિવાર આનંદ તથા ગૌરવની લાગણી અનુભવે છે.

BANAS NI PUKAR(WEEKLY)

બનાસ ની પુકાર

સાપ્તાહિક

Owner,Publisher, Printer & Editor :NARESHKUMAR D. VYAS

Saturday 8th February 2025 | gujaratintvnews@gmail.com | website: Naresh Vyas

ક્ષેત્રીય શિક્ષા સંસ્થાન ભોપાલમાં બહુભાષીય સેમિનારમાં નવસારીના એક પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકાએ પ્રતિનિધિત્વ કર્યું.

આપની આસપાસ બનતી ઘટનાઓની જાણકારી આપવા માટે સંપર્ક કરે.9913930408

ભોપાલ:- દિલ્હીના Regional Institute of Education, ભોપાલ કેન્દ્ર ખાતે રાષ્ટ્રીય કક્ષાના પાંચ દિવસીય સેમિનારમાં ગુજરાત રાજ્યના કુલ 14 શિક્ષકો પૈકી નવસારી જિલ્લાની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા રૂપલ અજિતભાઈ દીક્ષિત એ પ્રતિનિધિત્વ કર્યું.ગત દિવસોમાં તારીખ 31/ 01/ 2025 થી 04 /02 2025 એમ કુલ પાંચ દિવસો દરમિયાન ભારત દેશના કુલ પાંચ રાજ્યો ગુજરાત ગુજરાત, મહારાષ્ટ્ર મધ્યપ્રદેશ છત્તીસગઢ અને દીવ દમણ દાદરા નગર હવેલી એમ કુલ ચાર રાજ્યો અને એક કેન્દ્રશાસિત પ્રદેશ માટેની બહુભાષી શિક્ષણમાં પશ્ચિમ ભારતમાં પ્રાથમિક અને પૂર્વ પ્રાથમિક સ્તરે મુખ્ય સંસાધન વ્યક્તિઓની તાલીમ અંતર્ગત કેન્દ્ર અને રાજ્ય સરકાર દ્વારા ભારત દેશની તમામ પ્રાદેશિક ભાષાઓને બંધારણની આઠમી અનુસૂચિમાં 1632 ભાષાઓને સમાવિષ્ટ કરી ભાષા શિક્ષણને વધુ સુંદર બનાવવાનો એક મહાપ્રયાસ કરવામાં આવ્યો છે જેમાંથી પ્રિન્ટ મીડિયામાં 87 થી વધુ ભાષાઓ અને રેડિયોમાં 71 ભાષાઓનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. ફક્ત 47 ભાષાનો શાળાઓમાં પઠન પાઠનના રૂપમાં પ્રયોગ કરવામાં આવે છે અને ફક્ત 22 ભાષાઓ સંવિધાન દ્વારા માન્ય ગણવામાં આવી છે. વિશેષ રૂપે ભારતના વિભિન્ન રાજ્યમાં ત્રિ-ભાષા સૂત્રને અપનાવવા માટે તેમજ દેશભરમાં ભારતીય ભાષાઓના અધ્યયનને પ્રોત્સાહિત કરવા માટે તેમજ વિવિધ ભાષાઓને શીખવવા માટે તથા ભાષા શિક્ષણને લોકપ્રિય બનાવવા માટેનું ગહન અને ઊંડાણપૂર્વકનું ચિંતનાત્મક શિક્ષણ આપવામાં આવ્યું હતું. જેનો મુખ્ય ઉદ્દેશ બાળકો પોતાની માતૃભાષામાં શિક્ષણ મેળવે અને ત્યારબાદ જ માન્ય ભાષા ઉપર જાય તથા તેઓ પોતાની સ્થાનિક બોલીઓ, ભાષાઓ અને સંસ્કૃતિના વારસાનું જતન કરી શકે અને તેને ભૂલી ન જાય એ બાબત ઉપર વધુ ભાર મૂકવામાં આવ્યો હતો. જેમાં નવસારી જિલ્લાના નવસારી તાલુકાની સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના પ્રતિભાશાળી શિક્ષિકા રૂપલ અજીતભાઈ દીક્ષિતે પોતાની સક્રિય સહભાગીદારી નોંધાવીને નવસારી જિલ્લા,તાલુકા અને શાળાનું અસરકારક પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું.

પ્રસ્તુત સેમિનારમાં નવસારી જિલ્લાનું પ્રતિનિધિત્વ કરવા બદલ જિલ્લા શિક્ષણ અને તાલીમ ભવનના પ્રાચાર્યશ્રી યોગેશભાઈ તથા લેક્ચરરાધાબહેન,જિલ્લા પ્રાથમિક શિક્ષણ અધિકારીશ્રી અરુણ અગ્રવાલ સાહેબ, તાલુકા પ્રાથમિક શિક્ષણ અધિકારીશ્રી વિશાલસિંહભાઈ, બી.આર.સી કો-ઓર્ડીનેટરશ્રી શશીકતભાઈ ટંડેલ, સી.આર.સી કો-ઓર્ડીનેટરશ્રી સુમનભાઈ, સાતેમ પ્રાથમિક શાળાના મુખ્ય શિક્ષકશ્રી હિતેશભાઈ રાઠોડ અને શાળા પરિવાર આનંદ તથા ગૌરવની લાગણી અનુભવે છે. રિપોર્ટ બ્યુરોચીફ નવસારી

भोपाळ येथील राष्ट्रीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्राचे शिक्षक चमकले

भोपाळ,(आयर्विन टाइम्स प्रतिनिधी):
भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे आयोजित राष्ट्रीय स्तरावरील पाच दिवसीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या प्रभावी सादरीकरणाने उल्लेखनीय कामगिरी केली. या चर्चासत्रात विविध राज्यांतील शिक्षकांनी आपल्या मातृभाषेतील शिक्षणाच्या अनुभवांवर चर्चा केली. महाराष्ट्राच्या वतीने राज्यातील विविध जिल्ह्यांतील शिक्षकांनी सहभाग घेतला, त्यामध्ये सांगली जिल्ह्याचे प्रतिनिधित्व श्री. नारायण नानाराव शिंदे (जि. प. प्राथ. केंद्र शाळा, बाज, ता. जत) यांनी केले.

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार प्राथमिक शिक्षण मातृभाषेतूनच व्हावे, या उद्देशाने देशभरातील शिक्षकांसाठी हे चर्चासत्र आयोजित करण्यात आले होते. महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या मराठी भाषा आणि तिच्या बोलीभाषांचे महत्त्व स्पष्ट करताना, बहुभाषिक शिक्षण ही काळाची गरज असल्याचे अधोरेखित केले. विविध भाषांतील विद्यार्थी एकाच वर्गात शिकत असताना, त्यांना समजेल अशा रीतीने शिक्षण देण्याचे आव्हान शिक्षकांपुढे असते. या पार्श्वभूमीवर, स्थानिक भाषांमधील शिक्षण प्रभावीपणे कसे द्यावे, यासंदर्भात तज्ज्ञांनी मार्गदर्शन केले.

या चर्चासत्रात डॉ. चित्रा सिंग, डॉ. महेंद्र मिश्रा, डॉ. ज्योती चंदेल, डॉ. राघवजी मधड, डॉ. रुची मिश्रा, डॉ. जगदीप सोनवणे, डॉ. गंगा मेहता आणि डॉ. निलेश चंपानगी यांनी सखोल मार्गदर्शन केले. कार्यक्रमाचे अध्यक्ष सुरेश मकवाना यांनी संपूर्ण चर्चासत्राचे उत्कृष्ट सूत्रसंचालन केले.

महाराष्ट्रातील शिक्षकांच्या उत्कृष्ट सादरीकरणाची दखल घेत, चर्चासत्रात त्यांचा विशेष सत्कार करण्यात आला. बहुभाषिक शिक्षणाच्या क्षेत्रात महाराष्ट्राचे योगदान आणि पुढाकार कौतुकास्पद असल्याचे या वेळी स्पष्ट झाले.

આહવામાં મહિલા કોન્સ્ટેબલના ઘરે દિનદહાડે ૭૭ હજારની ચોરી

અંબાચ ગામનું બસ સ્ટેન્ડ ખંડિયેર બન્યું સફાઈ ન કરાતા ઝાડી-ઝાંખરા ઉગી નીકળ્યા

ચીખલી તા. પંચાયતની સામાન્ય સભામાં વિકાસકામો સમયસર પૂર્ણ કરવા રજૂઆત

વૃદ્ધો, વિકલાંગો, વિધવાઓ અને નિરાધારો માટે કચેરીએ ધરણા

પાણીખડક-પીપલખેડ રોડ પર ઝાડ સાથે અથડાયેલી કારમાંથી દારૂ મળ્યો

ભોપાલમાં બહુભાગીય સેમિનારમાં સાતેમના શિક્ષિકાએ પ્રતિનિધિત્વ કર્યું

ઉખાડિયા અને આંબલીયા ગામે પ્રેરણા ગ્રૂપ દ્વારા સહાય વિતરણ

સોશિયલ મીડિયા આવૃત્તિ
RNI No. : GUJGUJ/2016/68761

ક્રાઈમ પડકાર

બ્યુરોચીફ
મુર્તઝા યુસુફભાઈ પીપળીયા (મો.: 9157197653)
PRESS
મેનેજિંગ તંત્રી :
હિતેષભાઈ હિરાલાલ પ્રજાપતિ (મો.: 9913063889)
Chief Reporter Dahod District
Kousar Kapoor M.9825566519

દાહોદ

એન.સી.ઈ.આર.ટી ભોપાલ દ્વારા આયોજિત ક્ષેત્રીય શિક્ષા સંસ્થાન કાર્યક્રમમાં દાહોદનું પ્રતિનિધિત્વ ગોવિંદભાઈ પ્રજાપતિને પ્રાપ્ત થયું

ભારત દેશ એ અનેક વિવિધતાઓ સાથેની બહુ ભાષીય ભાષાઓ ધરાવતો અને અને અલગ અલગ ભિન્નતાઓ ધરાવતી બહુ સંસ્કૃતિને ઉજાગર કરતો દેશ છે જેમાં સમગ્ર દેશના તમામ રાજ્યોની ભાષાઓ અલગ છે અને રાજ્યોમાં પણ અલગ અલગ વિસ્તારની ભાષા અલગ અલગ રીતે બોલાય છે જેમાં સૌને પોતાની માતૃભાષા સૌથી વહાલી અને પ્રિય હોય છે જેને લઈને રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ અનુસાર દરેક પ્રાથમિક શાળાઓમાં બાળકોનું પ્રાથમિક શિક્ષણ પણ પોતાની માતૃભાષામાં જ થવું જોઈએ જેને લઈને બાળક પોતાની માતૃભાષાને તેમજ પોતાની સંસ્કૃતિને સૌથી શ્રેષ્ઠ રીતે સમજી શકે જે વિચારને રાષ્ટ્રીય ફલક પર મૂકવાના અભિગમ સાથે ગત તારીખ <u>૩૧/૦૧/૨૦૨૫</u> થી તારીખ <u>૦૪/૦૨/૨૦૨૫</u> ના રોજ મધ્યપ્રદેશના ભોપાલ ખાતે આવેલી આર.આઈ.ઈ. સંસ્થાન ખાતે પાંચ દિવસીય બહુ ભાષીય અને બહુ સંસ્કૃતિ સેમિનારનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું જેમાં દેશના ૩ રાજ્યો અને ૨ કેન્દ્રશાસિત રાજ્યો મળી કુલ ૫ રાજ્યો વચ્ચે યોજાયેલ આ સેમિનારમાં ગુજરાત ભરમાંથી ૧૪ જેટલા શિક્ષકોએ ગુજરાતનું પ્રતિનિધિત્વ કર્યું હતું જેમાં દાહોદનું પ્રતિનિધિત્વ કરવાનું સૌભાગ્ય ઝાલોદ તાલુકાની નિસરતા ગામડી પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષક એવા ગોવિંદભાઈ એમ.પ્રજાપતિને પ્રાપ્ત થયું હતું જેમાં ગોવિંદભાઈ પ્રજાપતિ એ ભોપાલ ખાતેની આ ૫ દિવસીય સેમિનારમાં હિસ્સો લઈ રાષ્ટ્રીય કક્ષાના શિક્ષણ જગતના મહાનુભવો આર.આઈ.ઈ. એન.સી.આર.ટી મંડળના ડીન ડૉ.મંડળ, ડૉ.સુરેશ મકવાણા તેમજ ગુજરાત રાજ્યના પૂર્વ નિયામક રાઘવજી માઘડ શૈક્ષણિક જગતના પાંચ રાજ્યોમાંથી ઉપસ્થિત રહેલા 50 થી વધુ શિક્ષણ વિદોની હાજરીમાં દાહોદની દર ચાર ગાઉએ બદલાતી પોતીકી બહુ ભાષિય અને વિભિન્નતામાં પણ ભિન્નતા ધરાવતી દાહોદની બહુ સંસ્કૃતિને રાષ્ટ્રીય કક્ષાએ ઉજાગર કરી દાહોદ જિલ્લાનું પ્રતિનિધિત્વ કરી દાહોદ જિલ્લાનું નામ ભોપાલ ખાતે અંકિત કર્યું હતું જ્યારે પાંચ દિવસીય આ સેમીનારના અંતે ઉપસ્થિત તમામ શિક્ષણ જગતના મહાનુભાવોનું અભિવાદન કરી તેઓનો આભાર વ્યક્ત કરવાનો સૌભાગ્યપૂર્ણ અવસર પણ દાહોદનું પ્રતિનિધિત્વ કરતા ગોવિંદભાઈ પ્રજાપતિને પ્રાપ્ત થયું હતું.

सहयोगी

डॉ. अंकिता जैन

नवराष्ट्र
www.navarashtra.com

शिक्षिका अनिता दाणे - जुंबाड यांना मिळाली राष्ट्रीयस्तरावर सहभागाची संधी

भोपाळमधील चर्चासत्रात घेतला सहभाग

भाषा समजून घेऊन शिक्षण द्यावे लागते

दिव्य प्रभात

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपालमां बहुभाषीय सेमिनारमां नवसारीनी सातेम प्राथमिक शाळाना प्रतिभाशाळी शिक्षिका रूपल दीक्षिते प्रतिनिधित्व कर्युं

NCERT દિલ્હીના Regional Institute of Education ના રાષ્ટ્રીય કક્ષાના પાંચ દિવસીય સેમિનારમાં ગુજરાત રાજ્યના કુલ ૧૪ શિક્ષકો પૈકી રૂપલ અજીત દીક્ષિતે પ્રતિનિધિત્વ કર્યું

भोपाळ येथील राष्ट्रीय बहु... चर्चासत्रात महाराष्ट्राचे शिक्षक चमकले

भोपाळ,(आर्वाचिन टाइम्स प्रतिनिधी): राष्ट्रीय भोपाळ (मध्य प्रदेश) येथे आयोजित राष्ट्रीय स्तरावरील पाच दिवसीय बहुभाषिक चर्चासत्रात महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या प्रभावी सादरीकरणाने उल्लेखनीय कामगिरी केली. या चर्चासत्रात विविध राज्यांतील शिक्षकांनी आपल्या मातृभाषेतील शिक्षणाच्या अनुभवांवर चर्चा केली. महाराष्ट्राच्या वतीने राज्यातील विविध जिल्ह्यांतील शिक्षकांनी सहभाग घेतला, त्यामध्ये सांगली जिल्ह्याचे प्रतिनिधित्व श्री. नारायण नानाराव शिंदे (जि. प. प्राथ. केंद्र शाळा, बाज, ता. जत) यांनी केले.

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार प्राथमिक शिक्षण मातृभाषेतूनच व्हावे, या उद्देशाने देशभरातील शिक्षकांसाठी हे चर्चासत्र आयोजित करण्यात आले होते. महाराष्ट्रातील शिक्षकांनी आपल्या मराठी भाषा आणि तिच्या बोलीभाषांचे महत्व स्पष्ट करताना, बहुभाषिक शिक्षण ही काळाची गरज असल्याचे अधोरेखित केले. विविध भाषांतील विद्यार्थी एकाच वर्गात शिकत असताना, त्यांना समजेल अशा रीतीने शिक्षण देण्याचे आव्हान शिक्षकांपुढे असते. या पार्श्वभूमीवर, स्थानिक भाषांमधील शिक्षण प्रभावीपणे कसे द्यावे, यासंदर्भात तज्ज्ञांनी मार्गदर्शन केले.

या चर्चासत्रात डॉ. चित्रा सिंग, डॉ. महेंद्र मिश्रा, डॉ. ज्योती चंदेल, डॉ. राघवजी मधड, डॉ. रुची मिश्रा, डॉ. जगदीप सोनवणे, डॉ. गंगा मेहतो आणि डॉ. निलेश चंपानारी यांनी सखोल मार्गदर्शन केले. कार्यक्रमाचे अध्यक्ष सुरेश मकवाना यांनी संपूर्ण चर्चासत्राचे उत्कृष्ट सूत्रसंचालन केले.

महाराष्ट्रातील शिक्षकांच्या उत्कृष्ट सादरीकरणाची दखल घेत, चर्चासत्रात त्यांचा विशेष सत्कार करण्यात आला. बहुभाषिक शिक्षणाच्या क्षेत्रात महाराष्ट्राचे योगदान आणि पुढाकार कौतुकास्पद असल्याचे या वेळी स्पष्ट झाले.